



दैनिक

# पुष्पांजली दुडे



नई सोच, नई पहल  
ज्वालियर सोमवार, 02 मार्च 2020

ज्वालियर | वर्ष : 03 अंक:63

पृष्ठ: 8 मूल्य: 2 रु.

## दिल्ली हिंसा पर कांग्रेस का प्रदर्शन, मांगा अमित शाह का इस्तीफा

**नई दिल्ली (ए.)**  
Parliament Budget Session का दूसरा सत्र शुरू हो गया है और यह सत्र के बेहद ही हंगामेदार होने वाला है। कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी दलों ने केंद्र सरकार को दिल्ली में हुई हिंसा के मामले में घेरने की तैयारी की है। इस पर बहस के लिए कांग्रेस ने लोकसभा में स्थगन प्रस्ताव भी दे दिया है। वहीं आम आदमी पार्टी के सांसदों ने सत्र शुरू होने के पहले ही परिसर में महात्मा गांधी की प्रतिमा के पास खड़े होकर विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिए। दूसरी तरफ राजसभा में विपक्ष के हंगामे के कारण सदन का कार्यवाही 2 बजे तक स्थगित हो गई है।



बजट सत्र के दूसरे हिस्से के पहले ही दिन संसद में दिल्ली दंगे पर सियासी संग्राम लगभग तय है। विपक्षी दलों ने इस दंगे में बड़ी संख्या में मौतों और बर्बादी पर केंद्र सरकार को घेरने के लिए संसद के दोनों सदन में कार्यस्थगन प्रस्ताव दिया है। कांग्रेस ने दंगों में केंद्र सरकार खासकर गृहमंत्रालय की नाकामी को मुद्दा बनाते हुए संसद में भी गृहमंत्री अमित शाह के इस्तीफे की मांग उठाने की घोषणा की है। आज संसद के दोनों सदन की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्ष की ओर से दिल्ली के दंगे में हुई मौतों और घायलों का मुद्दा उठाया जाएगा। लोकसभा में कांग्रेस संसदीय दल के नेता अधीर रंजन चौधरी की अगुआई में तो राज्यसभा में नेता विपक्ष गुलाम नबी आजाद के नेतृत्व में कार्यस्थगन नोटिस दिया जाएगा। बजट सत्र के दूसरे हिस्से में दोनों सदन की बैठक अगले एक महीने चलेंगी और तीन अप्रैल को यह सत्र समाप्त होगा।

## दिल्ली हिंसा में अब तक 46 लोगों की मौत, नाले से निकल रही हैं लाशें

**नई दिल्ली, (ए.)**  
दिल्ली हिंसा के बाद नाले से निकल रही हैं लाशेंकल मिला 3 लाशें, आज सुबह भी एक शव बरामददिल्ली हिंसा में मृतकों की संख्या 46 हुई दिल्ली में हिंसा शुरू होने के एक सप्ताह बाद खौफनाक सच सामने आ रहा है. हिंसा प्रभावित इलाकों के नाले से अब लाशें निकल रही हैं. पिछले दो दिनों में इन नालों से चार लाशें निकली हैं. सोमवार सुबह गोकुलपुरी नाले से एक और लाश बरामद हुई



है. इससे पहले रविवार को भी इस इलाके के नालों से 3 शव मिले थे, जिनको पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया है. नार्थ ईस्ट दिल्ली हिंसा मामले में अब तक दिल्ली पुलिस ने 334 एफआईआर दर्ज की हैं. इस मामले में 33 लोग गिरफ्तार किए गए हैं, जबकि 44 केस आर्म्स एक्ट के तहत दर्ज किए गए हैं. हिंसा में मरने वालों की संख्या 46 हो गई है. रविवार को गोकुलपुरी के दो नालों से 3 लाशें बरामद की गईं. सोमवार सुबह भी गोकुलपुरी नाले से एक डेड बॉडी बरामद की गई है. हालांकि क्या ये लाशें दिल्ली हिंसा से जुड़ी हैं या नहीं इस बात की पुष्टि होनी अभी बाकी है. बता दें कि दिल्ली हिंसा में अबतक नालों से कई लाशें बरामद की जा चुकी हैं. इसमें से आईबी कर्मचारी अंकित शर्मा की बॉडी भी शामिल है.

## दिल्ली हिंसा पर PIL, CJI बोले

**नई दिल्ली, (ए.)**  
दिल्ली हिंसा का मामला अब सुप्रीम कोर्ट में पहुंच गया है. सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में हिंसा और हेट स्पीच को लेकर जर्नलिस्ट याचिका दाखिल की गई है. इन याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट बुधवार को सुनवाई करेगा. हालांकि, याचिका पर सुनवाई से पहले चीफ जस्टिस एसए बोवडे ने बड़ी टिप्पणी की. सीजेआई एसए बोवडे ने कहा कि हम यह नहीं कह रहे हैं कि लोगों को मरना चाहिए, लेकिन इस तरह का दबाव कोर्ट नहीं संभाल सकता. यह उम्मीद होती है कि यह अदालत दंगा रोक सकती है. हम केवल एक बार कुछ हो जाने के बाद ही कुछ कर सकते हैं. हम पर एक तरह का दबाव महसूस होता है.

## इतना दबाव नहीं झेल सकते, हमारी भी कुछ सीमाएं

**नई दिल्ली, (ए.)**  
वरिष्ठ वकील कॉलिन गोंजाल्विस ने चीफ जस्टिस एसए बोवडे को बताया कि हर्ष मंदर और पांच पीड़ितों की ओर से याचिका दाखिल की गई है. इस मामले में जल्द सुनवाई की जरूरत है. रोजाना लोग मारे जा रहे हैं. सत्ताधारी पार्टी के लोगों ने हिंसा भड़काने वाले बयान दिए. दिल्ली हाई कोर्ट ने कुछ देर मामले की सुनवाई कर 6 हफ्ते के लिए मामले को टाल दिया. इसी तरह हाई कोर्ट ने जायिया हिंसा मामले में भी किया था.

## बोर्ड परीक्षा : ज्वालियर में बाप और बेटी एक साथ 12वीं की परीक्षा देने पहुंचे

**ज्वालियर /भोपाल।**  
माध्यमिक शिक्षा मंडल (माशिम) की बारहवीं बोर्ड की परीक्षा आज शुरू हो गई। बारहवाला का पहला पेपर विशिष्ट भाषा हिंदी रहा। ज्वालियर में आज परीक्षा में पद्या विद्यालय में बाप और बेटी दोनों एक साथ परीक्षा देने पहुंचे। पिता बाल किशन सैनी और बेटी तान्या सैनी दोनों एक ही सेंटर पर परीक्षा देने आए। बाल किशन सैनी यूनियन बैंक के कर्मचारी हैं। परीक्षा का समय सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक रहा। सभी परीक्षा केंद्रों पर नकल रोकने के लिए परीक्षार्थियों की कड़ी चेकिंग गई। परीक्षार्थी 8 बजे से पहले ही परीक्षा केंद्र पहुंच गए थे। दिव्यांग विद्यार्थियों की परीक्षा का समय दोपहर एक बजे से 4 बजे तक रखा गया। इस साल बारहवीं की परीक्षा में 8 लाख 2 हजार विद्यार्थी 3657 परीक्षा केंद्रों शामिल हो रहे हैं। 10वीं-12वीं दोनों परीक्षाओं में करीब 20 लाख विद्यार्थी शामिल हो रहे हैं। विद्यार्थियों के प्रवेश पत्र में निर्देश दिए गए थे कि परीक्षा केंद्र पर सभी विद्यार्थियों को परीक्षा कक्ष में प्रवेश 8:30 बजे तक उपस्थित हो जाएं। परीक्षा कक्ष में 8:45 के बाद किसी भी विद्यार्थी को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। वहीं प्रदेश के 448 संवेदनशील और 257 अति संवेदनशील केंद्रों पर विशेष सुरक्षा व्यवस्था की गई है। इन केंद्रों की वीडियोग्राफी व फोटोग्राफी भी की जा रही है।



## बुलंदशहर से भाजपा विधायक वीरेंद्र सरोही का दिल्ली में निधन, लीवर की बीमारी से पीड़ित थे

**बुलंदशहर. (ए.)**  
उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर सदर सीट से भाजपा विधायक वीरेंद्र सिंह सरोही का सोमवार सुबह निधन हो गया। सरोही 74 वर्ष के थे। लीवर की बीमारी से पीड़ित विधायक दिल्ली के एक अस्पताल में भर्ती थे, जहां सोमवार सुबह उन्होंने आखिरी सांस ली। विधानसभा में मुख्य सचेतक के सिरोही के निधन पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दुःख जताया है। सरोही का शव सोमवार को उनके बुलंदशहर के प्रीत विहार स्थित आवास ले आया जाएगा। सरोही बुलंदशहर सीट से कई बार विधायक रहे। वह उत्तर प्रदेश में राजस्व मंत्री के रूप में भी सेवाएं दे चुके हैं। फिलहाल, वह यूपी विधानसभा में मुख्य सचेतक के पद पर नियुक्त थे।



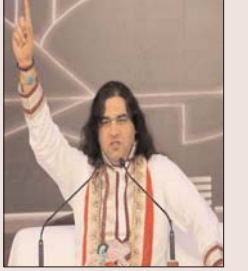
## ताड़केश्वर मंदिर परिसर में चाय बनाते वक्त सिलेंडर फटा, महिला और बच्चे की मौत

**जयपुर. (ए.)**  
शहर के चौड़ा रास्ता में सोमवार सुबह ताड़केश्वर मंदिर परिसर में बने एक मकान में सिलेंडर फट गया। हादसे में एक महिला और एक बच्चे की मौत हो गई है। धमाके से मकान का एक हिस्सा गिर गया। सोमवार का दिन होने के कारण मंदिर में बड़ी संख्या में भक्त एकर थे। हादसा मकान की पहली मंजिल पर हुआ। धमाका होते ही वहां चौख-पुकार मच गई। परिवार की एक महिला गैस पर चाय बना रही थी। तभी सिलेंडर के पाइप और फिर सिलेंडर ने आग पकड़ ली। यह सब इतनी तेजी से हुआ कि किसी को सोचने समझने का मौका ही नहीं मिला। सूचना पर पुलिस और सिविल डिफेंस की टीम मौके पर पहुंची। दोनों को मलबे से निकालकर अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।



## कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर समेत 6 के खिलाफ एससी-एसटी कानून के तहत केस दर्ज

**घर में घुसकर महिला के साथ छेड़छाड़ करने और मारपीट का आरोप**  
**मथुरा. (ए.)** वृन्दावन के कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर और उनके भाई विजय शर्मा सहित आधा दर्जन लोगों के खिलाफ अनुसूचित जाति से संबंधित व्यक्ति के घर में घुसकर मारपीट करने, जातिसूचक संबोधन करने एवं वहां मौजूद महिला से छेड़छाड़ करने का आरोप लगा है। पीड़ित का आरोप है कि की प्राथमिक विवेचना कराई जा रही है जिसके आधार पर कार्यवाही की जाएगी। पीड़ित का आरोप है कि वह एक पत्रकार है और हरियाणा की एक महिला ने इस कथावाचक के भाई पर यौन शोषण का आरोप लगाया था और पीड़ित ने महिला को बाईट ली थी। जिसके बाद जानकारी होने पर गुप्साए कथावाचक और उसके भाइयों ने घर में घुसकर हद दर्जे के बदसलुकी और पत्नी के साथ छेड़छाड़ की। पीड़ित की ओर से इस मामले में थाना हाइवे में कथावाचक सहित 6 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। जानकारी के मुताबिक थाना हाइवे क्षेत्र की राधावेली कॉलोनी निवासी पुष्पेंद्र कुमार आर्य द्वारा दर्ज कराई गई एफआईआर में बताया है कि वे एक पत्रकार हैं और 14 दिसम्बर 2019 को हरियाणा निवासी एक महिला ने प्रख्यात कथावाचक देवकीनंदन के भाई श्याम सुंदर पुत्र राजवीर पर यौन शोषण करने का आरोप लगाया। एफआईआर में बताया गया है उक्त महिला ने पुष्पेंद्र कुमार आर्य को इस संबंध में एक बाईट भी दी थी।



## चिन्मयानंद केस

## सुप्रीम कोर्ट की जज ने मामले से खुद को किया अलग, अब नई पीठ करेगी सुनवाई

**नई दिल्ली. (ए.)**  
चिन्मयानंद मामले में नया मोड़ आ गया है. सुप्रीम कोर्ट की जज जस्टिस आर. भानुमति ने खुद को इस मामले की सुनवाई से खुद को अलग कर लिया है. अब इस मामले की सुनवाई शीर्ष अदालत की नई पीठ करेगी. बता दें कि शाहजहांपुर रेप मामले में पीड़िता के पिता ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल करने मामले की सुनवाई उत्तर प्रदेश से दिल्ली ट्रांसफर करने की गुहार लगाई है. बता दें कि बीते 28 फरवरी को पूर्व केंद्रीय गृह राज्यमंत्री चिन्मयानंद पर रेप का आरोप लगाने वाली लॉ स्टूडेंट ने सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दाखिल कर केस को लखनऊ से ट्रांसफर करने की अपील की थी. साथ ही पीड़िता ने अपनी जान को भी खतरा बताया था. मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट में आज यानि सोमवार को सुनवाई होनी वाली थी, लेकिन इससे पहले ही जस्टिस आर. भानुमति ने सुनवाई से खुद को अलग कर लिया. जानकारी के अनुसार रेप पीड़िता ने सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दाखिल कर कहा था कि उसके केस को लखनऊ से ट्रांसफर किया जाए, उसने कहा था कि केस का ट्रायल लखनऊ से कहीं बाहर (दिल्ली) किया जाए. यहां उसकी जान को खतरा है. पीड़िता की अपील पर सुप्रीम कोर्ट ने इसे सुनवाई के लिए मंजू कर लिया. सुप्रीम कोर्ट मामले में अब दो मार्च को सुनवाई करेगा. साथ ही कोर्ट ने तब तक छात्रा को सुरक्षा मुहैया कराने का निर्देश जारी किया था.



## चिन्मयानंद पर क्या लगे आरोप

बता दें कि शाहजहांपुर के एसएस लॉ कॉलेज में पढ़ने वाली एलएलएम की एक छात्रा ने चिन्मयानंद के ऊपर किडनैपिंग और शारीरिक शोषण का आरोप लगाया था. पीड़ित लड़की ने फेसबुक पर वीडियो बनाकर डाला था जिसमें उसने चिन्मयानंद के घर पर कई लड़कियों की जिंदगी बर्बाद करने का आरोप लगाया था. उसके बाद पीड़िता रहस्यमय तरीके से गायब हो गई थी. जिसके बाद उसके पिता ने इस संबंध में चिन्मयानंद के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई थी.



## सक्षिप्त समाचार

## 1400 रूपयें अबैध शराब जाट

**भिण्ड।** गोहद थाना क्षेत्रांगत शनिवार को शाम करीब 5:20 बजे खरौआ गेट के पास एक युवक अबैध देशी शराब बेचने का कारोवार कर रहा है। तभी इसकी सूचना नजदीकी पुलिस थाने को किसी मुखबिर द्वारा मिली। पुलिस द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार गोहद क्षेत्र के पास स्थित खरौआ गेट के पास शाम के समय एक युवक वहां पर अबैध शराब बेचने का कारोवार कर रहा है। तभी इसकी सूचना किसी अज्ञात मुखबिर द्वारा गोहद थाना पुलिस को मिली। सूचना पर पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुये अपने टीम दल को साथ लेकर दबिश देकर उस जगह की चारों तरफ से घेराबंदी कर युवक को दबोच लिया और तलाशी लेने पर युवक के कब्जे से चौदह सौ रूपयें कीमत के 21 क्वार्टर अबैध देशी शराब जाट की और पृष्ठताह करने पर युवक ने अपना नाम कमलेश कुशवाहा निवासी वार्ड क्र.9 खरौआ गेट गोहद बताया। प्राप्त जानकारी पर से पुलिस से युवक के खिलाफ धारा 34 आबकारी एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई प्रारंभ की।

## युवती को ब्लैकमेल कर किया दुष्कर्म

**भिण्ड।** देहात थाना क्षेत्रांगत शनिवार को लहार रोड पर स्थित दुर्गा नगर में रहने वाली एक युवती के रात्रि के समय एक बदमाश युवक ने चिपके से युवती के अश्लील फोटों खींच लिये और उन फोटों को एफबी पर अपलोड कर लिये। तभी इसकी शिकायत युवती ने नजदीकी पुलिस थाने को दी। पुलिस द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार शनिवार को दुर्गा नगर में रहने वाली एक युवती के रात्रि के समय बदमाश युवक विक्रान्त पुत्र रविन्द्र बंधु निवासी अकबर पुरा जालौन उत्तरप्रदेश ने चुपके से युवती के अश्लील फोटों खींच कर उन्हें एफबी पर अपलोड करने की धमकी देकर उसके साथ कई बार दुष्कर्म किया और धमकाकर उसे जाने से मारने की धमकी दी। युवती के बयान पर से पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 376 के खिलाफ मामला दर्ज कर विवेचना में लिया।

## युवक ने आपसी झगड़े पर कट्टे से किया फायर

**भिण्ड।** मेहगाँव थाना क्षेत्रांगत शनिवार को शाम करीब 6:50 बजे वार्ड क्र.5 मेहगाँव में कुछ युवकों का किसी कहा सुनी को लेकर आपस में झगडा हो गया। तभी इसकी सूचना नजदीकी पुलिस थाने को मिली पुलिस द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार मेहगाँव क्षेत्र में स्थित वार्ड क्र.5 में फरियादी युवक उमेश पुत्र छविराम जाटव उम्र 32 साल निवासी मेहगाँव का आरोपी युवक आसाराम जाटव, बाँबी, मुकेश निवासीगण मेहगाँव का किसी मसले का लेकर आपस में विवाद हो गया, विवाद इतना बढ़ गया कि आरोपी युवक ने फरियादी युवक के साथ गाली गलौच कर, कट्टे से फायर किया और उसे जान से मारने की धमकी दी। प्राप्त बयान पर से पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ धारा 336, 294, 506, 34 के तहत प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई प्रारंभ की। इसी प्रकार पावई थाना क्षेत्रांगत शनिवार को शाम करीब 4 बजे ग्राम सारनपुरा में किसी बात की कहा सुनी को लेकर फरियादी युवक जय सिंह पुत्र स्व. रामस्वरूप जाटव उम्र 26 साल निवासी सारनपुरा व आरोपी युवक बनवा उर्फ बालकृष्ण जाटव निवासी ग्राम सारनपुरा का आपस में विवाद हो गया, विवाद इतना बढ़ गया कि आरोपी युवक ने फरियादी युवक के साथ गाली गलौच कर मारपीट कर दी और उसे जान से मारने की धमकी दी। फरियादी युवक के प्राप्त बयान पर से पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ धारा 323, 294, 506 के तहत प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई प्रारंभ की।

## विवाहिता ने फांसी लगाकर आत्महत्या की

**दतिया।** ग्राम जिगना निवासी एक छब्बीस साल की विवाहित महिला ने शनिवार को शाम अज्ञात कारणों के चलते अपने घर में फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। जिगना थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर प्रकरण को जांच में लिया है। जानकारी के अनुसार ग्राम जिगना निवासी सपना सपना (26) पति सुनील पाल शनिवार को अपने घर पर थी। शाम करीब साढ़े छह बजे उसने अज्ञात कारणों के चलते घर में फांसी लगा ली जिससे उसकी मौत हो गई। जानकारी मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और महिला के शव को कब्जे में लेकर उसे पीएम के लिये अस्पताल भेजा। महिला ने किन कारणों के चलते आत्मघाती कदम उठाया इसका पता नहीं चल सका। फिन्हाल पुलिस ने रामदयाल पुत्र मंशाराम पाल निवासी जिगना को सूचना पर मर्ग कायम कर उसकी मौत के कारणों की जांच शुरू की है।

## दो स्थानों पर जुआ खेलते छह लोग गिरफ्तार

**दतिया।** थाना उनाव पुलिस ने रविवार की दोपहर ग्राम परासरी में तास पत्तों से हारजीत का दांव लगा रहे तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। वहीं सिविल लाइन थाना पुलिस ने शनिवार की दोपहर निदान का कुआं के पास से तीन लोगों को जुआ खेलते हुये पकड़ा है। पुलिस ने दोनों मामलों में पकड़े गये लोगों के खिलाफजुआ एक्ट के तहत मामले दर्ज कर लिये हैं। जानकारी के अनुसार पुलिस ने रविवार की दोपहर करीब डेढ़ बजे ग्राम परासरी में स्कूल के पास तास पत्तों से हारजीत का दांव लगा रहे इरशाद अली, शिबू प्रजापति तथा शहीद खां निवासीगण परासरी को गिरफ्तार कर उनके पास से एक हजार रुपये व तास की गड्डी जब्त की है। वहीं सिविल लाइन पुलिस ने शनिवार की दोपहर करीब ढाई बजे निदान के कुआं के पास बगीचे में जुआ खेल रहे करन सिंह कुशवाहा, कामल कुशवाहा तथा हरिराम कुशवाहा निवासीगण दतिया को गिरफ्तार कर उनके पास से तेरह सौ रुपये व तास की गड्डी जब्त की है। पुलिस ने दोनों मामलों में पकड़े गये लोगों के खिलाफजुआ एक्ट के तहत मामले दर्ज कर लिये हैं।

## संसद श्रीमती संध्या राय प्राकृतिक आपदा ओलावृष्टि व भारी बारिश पर किसानों के बीच पहुंची

**भिण्ड।** संसद श्रीमती सन्ध्या राय ने मेहगाँव व गोहद विधानसभा क्षेत्र में पहुंचकर अत्यधिक ओलावृष्टि से हुई रात्रि में फसल खराब होने के कारण दौरा किया। इस दौरान ग्राम गाता, कतरोल, गोदावली, चिरौल, इत्यादि ग्रामों में प्रशासन के साथ सांसद श्रीमती संध्या राय ने ओलावृष्टि की हुई गंभीर समस्या पर सामूहिक दौरा किया एवं उन्होंने संकट की इस घड़ी में मौके पर प्रशासनिक अधिकारियों को आदेश किया सही से निरीक्षण कर उचित मूल्यांकन करने का आदेश भी किया। गोहद



विधानसभा की ग्राम चितौरा, चमेड़ी, ग्राम खोला एवं एंडोरी ग्रामों में अनेना पीड़ित क्षेत्र का जाकर सर्वे किया एवं

प्रशासन को साथ में ले जाकर दिखाया एवं सख्त निर्देश दिए कि किसी भी प्रकार की नरमी बर्दाश्त नहीं की जाएगी सर्वे

सही तरीके से किया जाए। इस दौरान लगभग एक सैकड़ से अधिक ग्रामों पर पर इस आपदा का प्रभाव पड़ा है।



## न्यू बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी संघ की बैठक सम्पन्न

**दतिया (ब्यूरो)।** न्यू बहुउद्देशीय कर्मचारी संघ जिला दतिया की बैठक जिला अध्यक्ष अरविन्द सिंह यादव के नेतृत्व में गंगोटिया हनुमान मंदिर पर आयोजित की गई। बैठक में ए.एन.एम. एवं एम.पी.डब्ल्यू की आधारभूत समस्याओं को लेकर चर्चा की गई। बैठक में समस्याओं के निराकरण के लिए 16 मार्च को सीएमएचओ दतिया को ज्ञापन देने का निर्णय लिया गया। बैठक में रेखा वर्मा जिला उपाध्यक्ष, श्रीमती गीता

दीक्षित, श्रीमती इन्दु राव, रूचि गुप्ता, रंजना दुबे, रिकनी जाटव, संध्या अहिरवार, भगवती चौरसिया, आशा बौद्ध, लीला बिलगैया, रामसखी नायक, महेश दत्त रावत, रमेश गुप्ता, सन्तोष पटवा, सन्तोष राठौर, जवाहर सिंह चौहान, आलोक जाटव, श्रीमती रेहाना बेगम, मीनू अडुजायिया, रामकुमारी श्रीवास्तव, हेमलता राजपूत, पारवती भगत, सविता भट्ट, रेशम कपासिया, नीलम अहिरवार, सीमा तिवारी आदि उपस्थित रहे।

## हाट बाजार में तब्दील हुआ जयेश्वर महादेव मेला



**सुमावली- सिंधिया स्टेट के** समय से प्रारंभ हुआ जयेश्वर महादेव मेला अब अपना स्वरूप खो चुका है। मेला की जगह पर हुए अतिक्रमण एवं शासन-प्रशासन द्वारा कोई रुचि नहीं लेने की वजह से यह स्थिति बनी है। महाशिवरात्रि से होली तक यहां जयेश्वर महादेव मेला भरता था। मेलने भर तक चलने वाले इस मेले की खूब धूम रहती थी। आसपास के ग्रामीण इस मेले में अपनी

जूरत का सामान खरीदते थे। लेकिन अब यह मेला अपना स्वरूप खो चुका है। इसका कारण एक तो मेला की जमीन पर अतिक्रमण कर लिया है दूसरा जनप्रतिनिधि एवं अधिकारियों ने भी इस ओर से अपनी आंखें मूंद ली हैं। मेला जमीन से अतिक्रमण हटाने को लेकर ग्रामीणों ने कई बार उच्च अधिकारियों को आवेदन भी दिया था। लेकिन इसी ने भी इस तरह ध्यान नहीं दिया। यही वजह है कि

पहले विशाल धू भाग पर लगने वाला मेला अब थोड़ी जगह में सिमटकर रह गया है।

बताया जाता है कि ग्वालियर राजघराने के द्वितीय महाराज माधोग्राम सिंधिया के कोई संतान नहीं थी। कुलगुरु के कहने पर स्टेट में १०८ जयेश्वर महादेव मंदिरों का निर्माण गया गया। सुमावली में भी सन् १९३२ में माधोग्राम सिंधिया के पुत्र जीवाजीराव सिंधिया द्वारा यहां जयेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया गया था। इसी मंदिर के नाम पर यहां का मेला प्रारंभ हुआ था। ग्रामीणों के मुताबिक पहले इस मेले में काफी रौनक रहती थी। यहां धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते थे। विशाल दंगल का आयोजन होता था, जिसमें नामी पहलवान शिरकत करते थे। लेकिन अब यह स्वरूप बदल चुका है। एक माह तक चलने वाला मेला अब सिर्फ दो दिन का रह गया है और उसने हाट बाजार का रूप धारण कर लिया है।

## एसडीएम के भेदभाव पूर्ण रवैये से नागरिकों में आक्रोश

**शिवपुरी ब्यूरो।** शहर के बीचों बीच से गुजरने वाली सड़क व सर्कुलर रोड को शासकीय योजना के अनुरूप फोर लेन में तब्दील किया जाना है। जिसके शासन द्वारा शासन द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार जिला प्रशासन द्वारा उक्त मार्ग पर नागरिकों द्वारा किए गए अतिक्रमणों को हटाना जा रहा है। जिसके तहत एसडीएम शिवपुरी द्वारा खुलेआम भेदभाव पूर्ण रवैया अपनाया गया है। अतिक्रमण हटाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा अधिकारियों को कोई गाईड लाईन नहीं दी गई है। कि मार्ग के दोनों ओर कितने फिट तक अतिक्रमण हटाना जाना है? इसके दूसरी ओर प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा रसुकदार लोगों के अतिक्रमण को न हटाकर गरीब तबके के लोगों के मकान व दुकान तोड़कर अपने कर्तव्य को इतिश्री कर रहे हैं एसडीएम द्वारा अतिक्रमण हटाने समय किए जा रहे भेदभाव के नागरिकों ने जब शिकायत की तो वह आक्रोशित हो गए और पीड़ित लोगों को वहां से चलता कर दिया। जिसकी वजह से जन सामान्य में आक्रोश की स्थिति उत्पन्न हो रही है। भारी वाहनों के लिए बोते वर्षों में बनाए गए वायुपास रोड के निर्माण में शटिया समिती का उपयोग किए जाने की वजह से ओवरब्रिज



क्षतिग्रस्त हो गया है। जिसके लिए फोर लेन से वाहनों का आवागमन रोक कर सर्कुलर रोड से वाहनों को निकाला जा रहा है। साथ ही प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा यहां से अतिक्रमण को हटाने की कार्यवाही की जा रही है। जिसके चलते शहर के बाईपास का काम चल रहा है उसी के चलते अब हवाई ट्रेफिक शहर के अंदर होकर गुजरेगा इसी कारण गुना बाईपास से लेकर ग्वालियर

बाईपास तक का अतिक्रमण तोड़ा जा रहा है जिसके कारण सड़क का चौड़ीकरण हो सके और हवाई वाहनों को निकालने में कोई समस्या पैदा ना हो लेकिन अतिक्रमण को लेकर की जाने वाली कार्यवाही आमजन को परेशान कर रही है तो वहीं दूसरी ओर इस कार्यवाही पर सवाल भी खड़े होने लगे हैं। गुना ग्वालियर बाईपास पर निवासरत अनेक लोगों का कहना है, ना तो अतिक्रमण तोड़ने वालों को यह पता

## शिवपुरी पुलिस द्वारा पशुओं से कूरता पूर्वक भरी एक बोलेरो पिकअप की जाट

**शिवपुरी ब्यूरो।** जिले के पिछोर थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम बार्चिन चौराहे पर चुंगीनाका पिछोर तरफ कूरता पूर्वक दूध-दूध कर पशुओं को वध करने के लिए अवैध रूप से एक बोलेरो पिकअप आ रही है। जानकारी के अनुसार थाना प्रभारी अन्य भार्गव द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में पुलिस टीम को मुखबिर के बताये स्थान पर खाना किया, पुलिस टीम द्वारा वाचरोन चौराहा चुंगीनाका पिछोर पर चेकिंग के दौरान एक बोलेरो पिकअप वाहन जिसमें पशुओं को दूध-दूध कर कूरता पूर्वक भरकर ले जाया जा रहा था को रोककर परिवहन के संबंध में वैध कागजात मांगने पर न होना बताया, बाद पुलिस टीम द्वारा मौके से आरोपी जातिद पुत्र रियाज कुशौरी, मंगु पुत्र इमहाल शेष निवासगण श्रौंसी उत्तरप्रदेश एवं शम्बीर पुत्र सदाद खान निवासी ग्राम नदना थाना भीती को विधिवत गिरफ्तार कर बोलेरो वाहन एवं दो चड्ढिया छोटी एवं तीन भैंसें कीमती 98000 रु तथा बोलेरो वाहन कीमत 500000 रु को विधिवत जप्त कर आरोपियों के विरुद्ध पशु कूरता अधिनियम के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया गया।

## सिंधिया ने ली फसलों को हुए नुकसान की जानकारी

## किसानों को सरकारी मदद दी जाएगी : सिंधिया

**भिण्ड।** बीते रोज पूरे भिंड जिले में तेज आंधी और बारिश के साथ कई जगहों पर ओलावृष्टि भी हुई। कई जगह से तो बेर व उससे भी बड़े बड़े आकार के ओले गिरने की बात भी सामने आई। इस बारिश और ओलावृष्टि से सरसों और गेहूं की फसल को भारी नुकसान पहुंचा है। नैमीसम आंधी बारिश और ओलावृष्टि होते ही अन्नदाता किसानों के चेहरों पर चिंता की लकीरें खिंच गयीं। इसी बीच कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव

ज्योतिरादित्य सिंधिया को जिला कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष डॉ रमेश दुबे से भिण्ड जिले में ओला वृष्टि और बारिश से हुए नुकसान के बारे में विस्तार से जानकारी दी, सिंधिया जी ने किसानों को संकट की इस घड़ी में धैर्य से व शान्ति से काम लेने का आग्रह किया है उन्होंने कहा है कि इस प्राकृतिक आपदा का सामना हम सब मिलकर करेंगे और प्रदेश सरकार के किसानों को पूर्ण सहयोग दिलाया जाएगा। डॉ रमेश दुबे ने इस आशय की जानकारी देते हुए बताया है। कि उन्होंने ज्योतिरादित्य सिंधिया मंशा से प्रशासन को अवगत करा दिया गया है।

## यादव महासभा की जिला बैठक में बोले कांग्रेस नेता - दामोदर सिंह यादव

## 6 मार्च को होने जा रहे ऐतिहासिक काम के साक्षी बनेंगे दतिया के हजारों लोग

**दतिया (ब्यूरो)।** प्रदेश की राजधानी भोपाल में हर जाति के संगठनों को पूर्व की सरकारों ने जमीनें आवंटित की थी और राजधानी में हर जाति संगठन के मांगलिक भवन एवं धर्मशालाये है। लेकिन वह यादव समाज जिसकी आबादी म.प्र. में 50 लाख है वह आजदी से लेकर अब तक सभी सरकारों और नेताओं से जमीन की मांग करती रही लेकिन किसी भी दल या नेता ने इस मांग को पूरा नहीं किया था। हमारे कथ्यास से प्रदेश के मुख्यमंत्री मा. श्री कमलनाथ जी ने यादव समाज की 50 वर्ष से लम्बित मांग को मानते हुए भोपाल में जमीन देने जा रहे हैं। आगामी 6 मार्च को भोपाल के विडुन मार्केट स्थित दर्शाह मेदान में यादव महासभा म.प्र. के प्रतीय अधीवेशन में मुख्य अतिथि के रूप में श्री कमलनाथ जी को मौजूदगी में ऐतिहासिक काम होने जा रहा है। जिसमें दतिया जिले से 2 हजार लोगों की संख्या का लक्ष्य रखा



गया है। उक्त बात कांग्रेस के स्टार प्रचारक एवं यादव महासभा म.प्र. के प्रदेश के प्रधान महासचिव दामोदर सिंह यादव ने रविवार को पिक मैरिज हाउस उनाव रोड पर आयोजित यादव महासभा म.प्र. के जिला सम्मेलन में कही। श्री यादव ने कहा कि कोई भी समाज तभी विकास के रास्ते पर जा सकता है जब उसमें फैली कुर्रितिया दूर हो इसलिये 6 मार्च को होने वाले प्रांतीय अधीवेशन में दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, जाति के अन्दर फैला वर्गवाद को मिटाने की शपथ के

साथ-साथ अहीर रेजोमेंट बनाने की मांग का प्रस्ताव भी पास किया जायेगा। इस अवसर पर यादव महासभा के जिलाध्यक्ष रामकिशोर यादव ने कहा कि दतिया जिला की तीनों विधानसभाओं से ही नहीं बल्कि गांव-गांव और मोहल्ला-मोहल्ला के लोग इस कार्यक्रम का हिस्सा बने यह हमारा प्रयास रहेगा। इस अवसर पर सतीश यादव पटेल पाली जनपद अध्यक्ष दतिया, जीतू खेरी पूर्व मण्डी अध्यक्ष लबदाक पूर्व जनपद अध्यक्ष भाण्डेर, हरीओम यादव,

देवेन्द्र यादव, मुकेश यादव, रघुराज गुड्डा यादव, अशोक सरपंच पिछोर, हरगोविन्द पाल, मुकेश नेता, पुनेन्द्र यादव, श्याम बिहारी, केशव सिंह यादव जनपद उपाध्यक्ष सेवण्डा, नाजिम खान, कश्मल सरपंच, राजकुमार पलोथर, गिरांज यादव, नरेंद्र जुर्जर, अमित राजपूत, मधुसूदन यादव, गुड्डन परासी, लला धमना, मरुतु गुप्ता, धर्मेन्द्र यादव, आनंद यादव, राजेन्द्र रावत, राजेन्द्र कुशवाहा, पलैया जी, मेजर यादव सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

## छात्र तनाव मुक्त, शांत और एकाग्रचित होकर दें परीक्षा: कलेक्टर

## शिवपुरी (ब्यूरो)।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश की वर्ष 2020 की हाईस्कूल सर्टिफिकेट कक्षा 10वीं परीक्षा 03 मार्च से तथा हायर सेकण्डरी स्कूल सर्टिफिकेट कक्षा 12वीं की परीक्षा 02 मार्च से प्रारंभ हो रही है। कलेक्टर श्रीमती अनुग्रहा पी ने परीक्षा में शामिल होने वाले सभी छात्र-छात्राओं से अपील करते हुए कहा है कि वे परीक्षा को लेकर किसी तरह का तनाव न लें। शांत और एकाग्रचित होकर तैयारी करें। पढ़ाई के साथ-साथ पर्याप्त नींद लें ताकि सुबह स्वयं को तरोताजा महसूस कर सकें। कलेक्टर श्रीमती अनुग्रहा पी ने सभी छात्र-छात्राओं से कहा है कि वे परीक्षा के तनाव से दूर रहे और परिणाम क्या होगा, इस दबाव में नहीं आएँ और तनावमुक्त होकर परीक्षा दें। अपने शिक्षकों से परामर्श लें। परीक्षा हॉल में प्रश्न पत्र मिलने के बाद सबसे पहले

प्रश्नों को अच्छी तरह से पढ़ें और प्रश्नों को समझें। इसके बाद हल करना शुरू करें। अभिभावकों की भी यह अपेक्षा रहती है कि उनके बच्चे परीक्षा में ज्यादा से ज्यादा अंक लेकर आएँ। इसी अपेक्षा में जाने-अनजाने में बच्चों पर अतिरिक्त मानसिक दबाव होता है। बच्चे के दिमाग में भी अपने माता-पिता की अपेक्षा पूरी करने के लिए अतिरिक्त मानसिक तनाव आ जाता है। जिसके कारण उनकी पढ़ाई ठीक से नहीं हो पाती। परीक्षा परिणाम अपेक्षा के अनुसार नहीं रहने से विद्यार्थियों के मन में निराशा का भावना आ जाती है। कई बार परीक्षा में असफल होने या अभिभावकों की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरने पर विद्यार्थी गलत कदम भी उठा लेते हैं। इसलिए आवश्यक है कि अभिभावक बच्चों पर किसी भी प्रकार का दबाव न बनाएँ और उनका मनोबल बढ़ाये।

## महिला सुरक्षा के प्रति महिलाओं एवं छात्राओं को किया जा रहा है जागरूक

**शिवपुरी ब्यूरो।** जिले में महिला सुरक्षा अभियान के तहत छात्र एवं छात्राओं में जागरूकता लाने के लिए कॉलेजों/स्कूलों/कोचिंग्स में जाकर शिवपुरी पुलिस द्वारा छात्र और छात्राओं को जागरूक किया जा रहा है। महिलाओं के साथ बदसलूकी व छेड़खानी समेत अन्य घटनाओं पर लगातार लगाये गए शिवपुरी पुलिस द्वारा छात्राओं को बाउंड्री वाल उनके आंगन तक को तोड़ दिया गया है। इसका एक और जहां लोगों ने विरोध किया तो वहीं प्रशासन अपनी हठधर्मिता पर अमदा है और वह किसी भी तरह से आमजन की सुनवाई नहीं कर रहा और अपने अनुसार ही अतिक्रमण मुहिम को अंजाम दे रहा है। यह कैसी अतिक्रमण मुहिम चलाई जा रही है जिसमें ना कोई नोटिस ना ही कोई सूचना और केवल जेसीबी लेकर प्रशासनिक टीम आई और जबरन लोगों के बने हुए पक्के मकानों को तोड़ा जा रहा है यह कहना है बाईपास पर निवासरत लोगों का ओ पी शर्मा का कहना है कि बाईपास पर मेरा मकान रोड से 40 फुट की दूरी पर बना है और उसकी बाउंड्री वाल कर वहां हरे-हरे पौधों और फूलों को रोपा गया है ताकि पर्यावरण संरक्षित हो लेकिन हमारे इस भवन को भी जिले की प्रशासनिक टीम ने बिना कोई नोटिस दिए निशाना बनाया और भवन से लगी दीवार तोड़ दी।





## अपनी तस्वीरों की वजह से फिर सुर्खियां बटोर रही हैं अमीषा पटेल

बॉलीवुड की पूर्व एक्ट्रेस अमीषा पटेल पिछले कुछ दिनों से अपनी तस्वीरों की वजह से सुर्खियां बटोर रही हैं। दरअसल, इन दिनों अमीषा पटेल सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर काफी एक्टिव हैं और वह लगातार अपनी तस्वीरें शेयर करती रहती हैं। इनमें से कुछ तस्वीरों में वह काफी बॉल्ड लुक में भी नजर आईं। जिस वजह से उन्हें ट्रोल्स के कमेंट्स का भी शिकार होना पड़ा। अमीषा ने साल 2000 में फिल्म कहां न प्यार है से अपने बॉलीवुड करियर की शुरुआत की थी। यह फिल्म उस वक की सुपरहिट फिल्मों में से एक थी और इस फिल्म के लिए अमीषा को बेस्ट एक्टर डेब्यू का अवार्ड

भी मिला था, लेकिन अब अमीषा बड़े पर्दे पर ज्यादा एक्टिव नहीं हैं और काफी वक से वह बड़े पर्दे पर नजर नहीं आई हैं। अमीषा ने गदर और हमराज जैसी सुपरहिट फिल्मों भी दी हैं लेकिन अब बड़े पर्दे से दूरियां बनाने के बाद वह सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव हैं और लगातार अपनी तस्वीरें शेयर करती रहती हैं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो वह बॉलीवुड में एक बार फिर बड़े पर्दे पर वापसी करना चाहती हैं और इसके लिए वह काफी कोशिश कर रही हैं। अमीषा ने कुछ साउथ फिल्मों में भी काम किया है। बता दें, अमीषा आखिरी बार फिल्म रस 2 और शॉर्टकट रोमियो में नजर आई थी।



## मुझे दोबारा दुल्हन नहीं बनना है: कृति खरबंदा

अपनी पिछली फिल्म शादी में जल्द आना का न्योता देने वाली ऐक्ट्रेस कृति खरबंदा अब वीरे की वेडिंग में फूल धमाल मचाने वाली हैं। असल जिंदगी में शादी को जरूरी नहीं मानने वाली कृति अपनी इन फिल्मों में इतनी बार दुल्हन बन चुकी हैं कि अब दोबारा दुल्हन नहीं बनना चाहतीं। इतना ही नहीं, उन्होंने तो अपनी मां से भी कह दिया है कि अगर कभी शादी की भी, तो पजामों में भागकर शादी करेंगी।

# बढ़ती उम्र के इन टिप्स के साथ रहें हरदम फिट

बढ़ती उम्र के साथ आपकी लाइफ भी बिजी होती जाती है। तरह-तरह की जिम्मेदारियां, बढ़ती जरूरतें आपको मशीन बना देती हैं और आपको आराम करने की फुर्सत ही नहीं मिलती, फिर आप नर्वस सिस्टम जाने-अनजाने में ही प्रभावित होने लगते हैं। नर्वस सिस्टम का कमजोर होने एक ऐसी बीमारी है, जो आपकी हेल्थ को दीमक की तरह चाट जाती है। आप शारीरिक-मानसिक रूप से किसी भी काम के लिए फिर नहीं रह जाते हैं। यह एक ऐसा रोग है, जो बाहर से नजर नहीं आता, पर अंदर ही अंदर आपको पीडा से छटपटाते रहते हैं। आप हमेशा शारीरिक और मानसिक दुर्बलता महसूस करते हैं। बात-बात पर आपको गुस्सा आ जाता है। आप जल्दी ही झगडा कर बैठते हैं। अपना कॉन्फिडेंस खो बैठते हैं। मन अस्थिर रहने लगता है और अच्छे-बुरे को समझने की क्षमता कम हो जाती है।



हर वक ये विचार आता रहता है कि आप किसी योग्य नहीं हैं। झूठ बोलना, स्वार्थी बन जाना आम बात हो जाती है। भूख नहीं लगती है। कब्ज बनी

रहती है। मन में आत्महत्या का विचार आने लगता है। उपचार के अभाव में आपको लकवा हो जाना, बहरोपन आ जाना या बात करने की शक्ति खत्म हो

जाना जैसी परेशानियां भी हो सकती हैं। योगाभ्यास से नर्वस सिस्टम की तमाम परेशानियां दूर हो जाती हैं और

आप खुद को पहले की तरह फिट और तरोताजा महसूस करने लगते हैं। इसके लिए सयम निकालें क्योंकि फिट रहने के लिए खुद की देखभाल जरूरी है और यह काम से भी अधिक जरूरी है। भोजन जल्दी पचने वाला और क्षारप्रधान लें। ऐसा खाना खाएं, जिसमें पर्याप्त मात्रा में सोडियम, फास्फोरस और विटामिन बी-1 हो। यह खनिज तथा विटामिन फलों, दूध, चोकर, हरी सब्जियों, दालों के छिलकों आदि में सबसे अधिक होता है। ब्रेकफास्ट में कभी दूध-दलिया, कभी मूंग, मोट, चना, अंकुरित कर बाद में थोड़ा भाप से हल्का पकाकर उसमें प्याज, अदरक, टमाटर, खीरा आदि मिलाकर या मिक्स आटे की रोटी मक्खन-मलाई के साथ लें और साथ में दूध पीएं। कोई नशा ना करें। शराब पीते हैं तो कम करें या बिल्कुल ही छोड़ दें। शराब बौडी और आत्मा दोनों का ही नाश करती है।

## आयुर्वेद में छिपे एलोवेरा के अनोखे गुण

आयुर्वेद में छिपे एलोवेरा के अनोखे प्रयोग जो आपको बनाएंगे कई बीमारियों से मुक्त और स्वस्थ। एलोवेरा का पौधा काटेदार होता है। जिसके किनारे पतले होते हैं। एलोवेरा से निकलने वाला गुदा ही असल औषधी होती है। एलोवेरा में मिनरल्स, एंजाइम, विटामिन, पॉलिसैचराइड्स और फेटी एसिड्स जैसे लगभग 200 तत्व पाए जाते हैं, जिनका प्रयोग बहुत सारे रोगों में घरेलू इलाज के तौर पर किया जाता है। इसमें पर्याप्त मात्रा में एंटी ऑक्सीडेंट्स होते हैं। डेली आप एलोवेरा जूस पीने से त्वचा साफ और एक्ने रहित होती है। एलोवेरा को मास्क की तरह से भी चेहरे पर लगा सकते हैं। एलोवेरा में विटामिन ए, सी, ई, फॉलिक एसिड, कोलीन, बी1, बी2, बी3 और बी6 पाया जाता



है। एलोवेरा पीलिया रोगी के लिए रामबाण का काम करता है। 15 ग्राम एलोवेरा का रस सुबह शाम पीयें। आपको इस रोग में लाभ करेगा। एलोवेरा की पत्तियों में पाए जाने वाले जैल में 99 प्रतिशत पानी होता है। जिसका इस्तेमाल लगभग 5000 साल में दवाओं के रूप में इसका उपयोग किया जा रहा है इसमें पर्याप्त मात्रा में एंटी

ऑक्सीडेंट्स होते हैं। डेली आप एलोवेरा जूस पीने से त्वचा साफ और एक्ने रहित होती है। एलोवेरा को मास्क की तरह से भी चेहरे पर लगा सकते हैं।

एलोवेरा मोटापा कम करने मदद करता है। 10 ग्राम एलोवेरा के रस में मेथी के ताजे पत्ते को पीसकर उसे मिलाकर प्रतिदिन सेवन करें।



## कालीमिर्च में समाएं औषधिय गुण

भारतीय रसों में जब चटपटा खाने की बात हो, या सलाद को जायकेदार बनाने की बात आए, तो काली मिर्च सबसे ऊपर रहती है। इसकी विशेष सुगन्ध रसों को भी महकती है और डाइनिंग टेबल को भी। इसका उपयोग घरेलू इलाज में भी किया जा सकता है। आज हम आपको बताने जा रहे हैं काली मिर्च के कुछ ऐसे ही रामबाण प्रयोग। काली मिर्च में एंटीऑक्सीडेंट्स हैं, जो तरह काम करती है। यह मंगनीज और आयर्न जैसे पोषक तत्वों का बहिया स्रोत है, जो शरीर के सुचारु रूप से कार्य करने के लिए आवश्यक है। यह देसी मसाला बहुत बड़ी औषधि का भी काम करता है। इसके प्रयोग से सांस की बीमारी, बुखार, खांसी, पेट के रोग और यदि पेट में कांच आदि का टुकड़ा चला जाए तो उसको निकालने में भी काफी मदद करते हैं। यदि पेट में कांटा, कांच का टुकड़ा आदि खाने के साथ या किसी भी भांति चला जाए तो पके हुए अन्नानास के साथ काली मिर्च और सेंधा नमक लगाकर खाने से पेट में गया हुआ कांच या कांटा निकल जाता है यदि उल्टी आ रही हो या जीव मिचला रहा हो, तो नींबू के साथ काली मिर्च और सेंधा नमक लगाकर चूसने से जी मिचलाना बंद हो जाता है और उल्टी भी नहीं आती। कब्ज होने पर काली मिर्च के चार-पांच साबुत दाने दूध के साथ रात को लेने से कब्ज में लाभ मिलता है। मलेरिया होने पर काली मिर्च के चूर्ण को तुलसी के रस में मिलाकर पीने से लाभ होता है।

# घरेलू उपाय: हाथों की रूखी त्वचा से पाएं छुटकारा



कि हाथों को नियमित तौर पर ऐक्सफोलिएट और मॉइश्चराइज किया जाए। हाथों पर लगाने के लिए बहुत से पैक आप घर पर

भी तैयार कर सकती हैं। टोमेटो लाइम सॉफ्टनर: आपको हाथ बहुत ही रूखे हैं, तो 1 टमाटर और नींबू का जूस



निकाल कर अच्छी तरह मिला लें। कम से कम 2-3 ग्लिसरीन मिलाएं और इस पेस्ट से हाथों का मसाज करें। 5 मिनट के बाद

गरम पानी से साफ कर लें। नरिशिंग क्रीम :1/3 कप ग्लिसरीन और 2/3 कप गुलाबजल को मिला लें। इसे

बोतल में भर कर फ्रिज में रख दें। जब भी कुछ काम करने के बाद हाथ रूखे लगें तो इससे हाथों की मसाज जरूर कर लें।

**हनी एग सॉफ्टनर:** एक बाउल में अंडे का सफेद हिस्सा, शहद थोड़ा सा, 1 चम्मच बाली पाउडर, 1 चम्मच ग्लिसरीन लें। अब इन सब को अच्छी तरह मिला कर हाथों पर लगाएं। कुछ मिनट तक हाथों पर लगा रहने के बाद पानी से साफ कर लें।

**लाइम सॉफ्टनर:** 1 बड़ा चम्मच नींबू का रस, 1 छोटा चम्मच चीनी और थोड़ा पानी मिला कर पेस्ट बना लें। इस मिक्सचर को हाथों पर 5 मिनट के लिए लगा कर छोड़ दें। फिर हाथों को गरम पानी से साफ कर के सुखा लें।

## घरेलू उपचार: गर्दन के कालापन से छुटकारा

भारतीय सौन्दर्य में शारीरिक सुंदरता में जहां एक ओर चेहरे को सुंदरता का महत्व है, वहीं गर्दन का महत्व भी कम नहीं माना जाता। उस पर अगर सुराहीदार गर्दन हों, तो क्या कहने आपको सुंदरता में चार चांद लगा जाते हैं। लेकिन गर्दन को नियमित सफाई या देखभाल ना की जाए तो यही सब चीजें आपको सुंदरता को कम कर देती हैं। आपको तो पता ही है, कि गर्दन हमारे शरीर का एक ऐसा अंग है जिस पर उम्र का प्रभाव जल्दी पडता है गर्दन पर समय से पूर्व झुर्रियां उभर आने, साथ ही बारीक धारियों के उभरने, चेहरे की तुलना में गर्दन का रंग उतर जाने, गर्दन काली-मैली हो जाने, गर्दन को नियमित सफाई ना करने से चेहरे और गर्दन को स्किन के रंग में फर्क साफ देखाई देने लगता है वहीं दूसरी ओर गर्दन बेडेल हो जाने की समस्या भी उत्पन्न हो जाती है। इसलिए गर्दन को भी उसी प्रकार से देखभाल करनी चाहिए जैसे चेहरे की जाती है। गर्दन मोटी, झुर्रियां पडने लगीं तो खूबसूरत चेहरा होने के बावजूद सुंदरता फोकी पडने लगती है। लेकिन ठीक साफ-सफाई, उचित देखभाल व व्यायाम की मदद से गर्दन को सुंदर और निखरा बनाया जा सकता है। गर्दन पर उम्र का प्रभाव भी जल्दी पडता है। चेहरे की तरह गर्दन भी धूल, गर्द व धुएं की चपेट में आती है। इससे गर्दन पर झुर्रियां पडने लगती है और इसकी त्वचा कांतिहीन हो जाती है, इसलिए चेहरे के साथ-साथ नियमित रूप से

गर्दन को सफाई का भी ख्याल रखना जरूरी होता है नहीं तो चेहरे और गर्दन के रंग में फर्क आ जाता है। हफ्ते में 2-3 बार पपीते के गूदे से मसाज करने से गर्दन को स्किन पर निखार आता है और साथ ही झुर्रियां भी दूर होती हैं। गर्दन का पीलापन दूर करने के लिए जैतून के तेल की मसाज करें। एक केलो को ठीक से मसल डालें। इसमें एक चम्मच मिलक पाउडर मिलाकर इस पेस्ट को गर्दन पर लगाएं। सूखने पर उम्र का प्रभाव जल्दी पडता है। इस प्रयोग से गर्दन को झुर्रियां दूर हो जाती हैं। नींबू को बीच से काटकर इसमें से बीच निकाल लें। इस नींबू को कच्चे दूध में डुबो-डुबोकर मैली गर्दन पर रगड़ें। इससे गर्दन की मैल दूर हो जाएगी।



## बिग बॉस कंटेस्टेंट मिनिषा लांबा टीवी शो में करेंगी विष कन्या का रोल

बॉलिवुड ऐक्ट्रेस मिनिषा लांबा छोटे पर्दे पर एंटी कर रही हैं। वह सब टीवी के सीरियल तेनाली रामा में विष कन्या का रोल निभाएंगी। उन्होंने बताया कि उनका रोल काफी गुस्सेवाला और रहस्यमयी होगा। बता दें कि इससे पहले मिनिषा बिग बॉस सीजन 8 में छोटे पर्दे पर दिखाई दी थीं। मिनिषा से जब पूछा गया कि उन्होंने इस रोल के लिए हां क्यों किया तो उन्होंने जवाब दिया, मैं हमेशा से मजेदार किरदार निभाना चाहती थी साथ ही ऐसा काम भी करना चाहती थी जो ज्यादा से ज्यादा लोगों को आकर्षित करे। तेनाली रामा में मेरा रोल रहस्यमयी है। मिनिषा इससे पहले किडनेय फिल्म में इमरान खान के साथ काफी सेंसुअस रोल में दिखाई दे चुकी हैं। सीरियल में उनको एंटी से इंटरस्ट जरूर आ जाएगा। वह पहली बार छोटे पर्दे पर बिग बॉस में दिखाई दी थीं लेकिन इसमें ज्यादा दिनों तक नहीं टिक सकीं। इसके बाद खबर थी कि वह लव का है इंतार सीरियल में दिखाई देंगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ।









सफेद बालों को छुपाने के लिए या फिर खुद को फैशनबल बनाए रखने के लिए हेयर कलर का इस्तेमाल आम हो गया है। पर हेयर कलर ब्रांड्स की भीड़ में से कुछ भी चुन लेना समझदारी नहीं है। कुछ बातों को ध्यान रखना जरूरी है, तभी तो बाल अपने नए रंग के लिए शुक्रिया कहेंगे। बता रही हैं मृदुला भारद्वाज



हेयर कलरिंग आज फैशन का हिस्सा है, इसलिए कॉलेज जाने वाली लड़कियों से लेकर सफेद बालों को छुपाने के लिए महिलाएं हेयर कलरिंग करा रही हैं। अच्छी क्वालिटी और त्वचा के रंग के मुताबिक महिलाएं बालों में कलर करवाना प्रसंद कर रही हैं। निश्चित ही बालों में कलर करवाकर आप खुद को खास लुक दे सकती हैं। बॉलीवुड अभिनेताओं और अभिनेत्रियों पर हेयर कलरिंग के खुमार को तो सहज देखा जा सकता है। हेयर कलर एक्सपर्ट की मानें तो महिलाएं अब जागरूक हो गयी

हैं। वे किसी फिल्मी स्टार को नकल पर नहीं, बल्कि अपनी पर्सनेलिटी और प्रोफेशन के मुताबिक हेयर कलर करवाना प्रसंद करती हैं। न सिर्फ भारत, बल्कि विदेशों में भी इन दिनों ग्लोबल कलर स्टाइल का क्रेज महिलाओं व पुरुषों दोनों के बीच है। रेड, ब्लॉन्ड व प्लेटिनम अब फैशन में नहीं हैं। कॉलेज की लड़कियों में नए कलर्स तेजी से जगह बना रहे हैं। लड़कियां खासतौर पर सनकिस्ड कलर व हाइलाइट्स करवाना प्रसंद कर रही हैं। ये कलर त्वचा के अनुरूप लगते हैं। कॉफी, चॉकलेट

ब्राउन, हनी और केरेमल भारतीय त्वचा पर काफी फबते हैं।

**हेयर कलरिंग और सावधानियां**

श्रीबालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट के सीनियर कंसल्टेंट, डर्मेटोलॉजिस्ट डॉ निपुण जैन कहते हैं, 'कई बार बालों में कलर के बाद सिर की त्वचा में मामूली जलन जैसी सननाहट या खुजली होती है, इसे एलर्जी ही कहा जाता है। लेकिन यह अवस्था बहुत मामूली होती है, जो कुछ घंटों बाद ठीक हो जाती है।

# नए रंग में खिलखिलाएं आपके बाल!

लेकिन गंभीर मामलों में एलर्जी की वजह से सिर के कुछ विशेष हिस्से जैसे माथा, कान, गर्दन के पीछे की ओर और आंखों में जलन, सूजन, खुजली और रेशेज भी हो जाते हैं। कई बार यह एलर्जी इतनी गंभीर होती है कि अस्पताल भी जाना पड़ सकता है। कोई भी नया हेयर कलर बिना एक्सपर्ट की सलाह के इस्तेमाल नहीं करें, क्योंकि हेयर एक्सपर्ट कुछ आसान और करने लायक निर्देश देते हैं, जिनसे एलर्जिक रिएक्शंस से बचा जा सकता है। हेयर कलर के वक्त ख्याल रखें कि हर बार किसी नए ब्रांड के उत्पाद को इस्तेमाल न करें। एक ही और अच्छी क्वालिटी के उत्पाद का ही इस्तेमाल करें। हेयर कलर के प्रोडक्ट्स का सही चुनाव न होने से बाल झड़ने जैसी कई अन्य समस्याएं भी हो सकती हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, जिन्हें कलर्स से एलर्जी है और वे फिर भी नियमित रूप से कलरिंग करवाते हैं तो उनमें स्किन कैंसर तक होने का खतरा हो सकता है। बालों के लिए जो कलर अनुरूप हो, उसे ही इस्तेमाल करें। डायबिटिक, हाई बीपी, प्रेगनेंट लेडी व बच्चों को अमोनिया फ्री कलर ही इस्तेमाल करना चाहिए। मेटेलिक कलर का उपयोग नुकसानदेह हो सकता है। यदि पहली बार कलर करवा रहे हैं तो एलर्जी पैच टेस्ट जरूर करें। कलर करने में इस्तेमाल होने वाला ब्रश व बाउल साफ रखें। स्कल्प का टेस्ट भी जरूर करवाएं।

**हेयर कलरिंग के और भी हैं विकल्प**

हेयर कलर इस्तेमाल नहीं करना चाहती हैं या एलर्जी की समस्या है तो बालों को सफेदी को छिपाने के लिए हिना का भी प्रयोग कर सकती हैं। हिना एक प्राकृतिक कंडीशनर होने के साथ बालों को सफेदी छिपाती है। बालों में निखार आता है और साथ ही वे सिल्की बनते हैं। एक्सपर्ट की राय भी जरूरी है।

**कलरिंग कराते वक्त रखें ध्यान**

- बालों को कलर कराने से पहले उन्हें अच्छी तरह से वॉश करें, वरना कलर का रंग नहीं चढ़ेगा।
- बालों को कलर करवाते समय पर्म और स्ट्रेटनिंग न करवाएं। दोनों प्रोसेस एक साथ नहीं होने चाहिए। कलरिंग करवाने से दो-तीन हफ्ते पहले ही बालों को पर्म और स्ट्रेट करवाएं।
- कुछ दिन पहले ही बालों में मेंहदी लगाई है तो कलर न करवाएं।
- कलर करवाते वक्त अमोनिया फ्री प्रोडक्ट ही इस्तेमाल करें।
- बालों को कलर करवाने के बाद कलर प्रोटेक्टिव व सल्फेट फ्री शैम्पू का ही इस्तेमाल करें। ऐसे बालों पर हार्ड या एंटी डैंड्रफ शैम्पू का प्रयोग न करें, वरना बालों का रंग उतर भी सकता है।
- शैम्पू करने के बाद बालों पर कंडीशनर जरूर लगाएं। इससे बालों की चमक बरकरार रहेगी।
- बाल धोने के बाद ब्लो ड्राई न करें, बाल

**घर पर करें बालों को कलर**

आप चाहें तो घर पर ही बालों को कलर कर सकती हैं -

- बाल कलर करते वक्त हाथों में दस्ताने पहनें, भले ही कलर उंगलियों से न लगाकर ब्रश से लगा रही हों।
- कलर करने से पहले बाल अच्छी तरह धोकर सुलझा लें। इसके बाद उन्हें दो भागों में बांट कर धीरे-धीरे कलर लगाएं।
- कंधी के एक सिरे से बालों को उठाते हुए बालों में कलर लगाएं।
- बालों की नई बढ़त में अच्छी तरह से कलर लगाएं। बालों के जिस हिस्से में पहले से कलर है, उस हिस्से और जड़ों के बीच में मिलाकर कलर लगाएं।
- कलरिंग के पाउच या डिब्बे पर लिखी कलर लगाने की विधि व निर्देश को पढ़कर ही दिए निर्देशों के अनुसार बालों में कलर लगाएं।

रूखे हो जाते हैं। हफ्ते में एक बार हेयर स्पा ट्रीटमेंट जरूर लें। यह बालों को स्वस्थ बनाए रखने के साथ ही कलर को जल्दी हल्का भी नहीं होने देता। रूखे बाल न धोएं। हफ्ते में एक बार बालों में अच्छी तरह से तेल अवश्य लगाएं। अगर आप स्विमिंग करती हैं तो ऐसे बालों को एक्सट्रा केयर की जरूरत होती है। दरअसल, पूल के पानी में मौजूद क्लोरीन से कलर्ड बाल खराब हो जाते हैं। बालों को कलर करवाते वक्त ध्यान रखें कि कलर अच्छी कंपनी का हो। बालों को धोने के लिए गर्म पानी का इस्तेमाल न करें, इससे कलर खराब हो सकता है। सूरज के सीधे संपर्क में जाने से बचें। हैट्स, स्कार्फ आदि का उपयोग करें या फिर सन प्रोटेक्ट प्रोडक्ट्स का प्रयोग करें,

## ऐसे लोगों को मिलती है साक्षात लक्ष्मी स्वरूप पत्नी



सुन्दर और योग्य जीवनसाथी पाने की चाहत सभी के मन में होती है। इसके लिए कुछ लोग देवी-देवताओं की आराधना करते हैं तो कुछ ज्योतिषीय उपाय करके सुन्दर पत्नी पाना चाहते हैं। किन्तु कुछ ऐसे भाग्यशाली लोग होते हैं जिन्हें ईश्वर साक्षात लक्ष्मी स्वरूप पत्नी प्रदान करते हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार जिन लोगों का जन्म ज्येष्ठ नक्षत्र में होता है वह ऐसे ही भाग्यशाली लोग होते हैं। इस नक्षत्र का स्थान 27

नक्षत्रों में से 23 वां है। इस नक्षत्र में जिन लोगों का जन्म होता है वह दिखने में छहरे होते हैं। धर्म-कर्म एवं ईश्वर में इनकी गहरी आस्था होती है। इनका हृदय भावुक होता है, जहां तक हो सके इनकी यही कोशिश होती है कि इनके व्यवहार से किसी को कष्ट नहीं पहुंचे। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति पर शनि एवं मंगल का प्रभाव रहता है क्योंकि इसके दो चरण मकर और दो चरण कुंभ राशि में होते हैं। जबकि इसका स्वामी मंगल ग्रह होता है।

धनिष्ठा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति की बुद्धि प्रखर होती है। इतिहास एवं विज्ञान विषयों में इनकी रुचि होती है। ऐसे व्यक्ति मन की बातों को जल्दी किसी पर जाहिर नहीं होने देते। स्वास्थ्य आमतौर पर सामान्य होता है। इन्हें कफ जनित रोग की संभावना रहती है। खान-पान में रक्त बढ़ाने वाले पदार्थ का सेवन करना इनके लिए फायदेमंद होता है।



**राशि से जानिए शादी से पहले की बातें**  
इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति का पारिवारिक जीवन सुखी होता है। जिन महिलाओं का जन्म इस नक्षत्र में होता है वह गुणवान और गृह कार्य में दक्ष होते हैं। अपने कुशल व्यवहार से परिवार में तालमेल बनाए रखती हैं। सुख समृद्धि के लिए इन्हें अपने घर में शमी का वृक्ष लगाना चाहिए।

ओसीडी को मजबूरी या ऑब्सेशन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है क्योंकि कई लोग जब इससे ग्रसित होते हैं तो उनकी स्थिति को दूसरा व्यक्ति आसानी से समझने का प्रयास करता है।

ओसीडी से ग्रसित लोग, उनके जुनूनी आवेगों, विचारों और आग्रहों की अनदेखी करते रहते हैं और खुद को ही सही मानते हैं। उन्हें अंदरूनी भय होता है और वो उससे अकेले ही फाइट करने में जुटे रहते हैं। साधारण शब्दों में कहा जाए, तो ओसीडी से ग्रसित लोग, साधारण बातों में भी बखेड़ा कर देते हैं और अपनी



ही सोच को थोपने का प्रयास करते हैं। सामान्य तौर पर, ओसीडी से ग्रसित लोग खुद को हर समय अकेला महसूस करते हैं, उन्हें लगता है कि वो असहाय हैं और

किसी को भी उनकी परवाह नहीं है, ये व्यवहार उनके मन में दिन में कई बार आ सकता है या वो कुछ-कुछ समय पर इसके शिकार हो जाते हैं। ओसीडी से पीड़ित लोग, अपने मन में सबसे ज्यादा मनगढ़ंत कहानियों को बनाते हैं, वो अलग ही पिक्चर को क्रिएट करते रहते हैं। इस प्रकार के रोगियों के तर्क बेहद बेकार और बिना सिर पैर के होते हैं। लेकिन वे दूसरों का जीवन, अपने व्यवहार से खराब कर देते हैं। ओसीडी से बच्चे भी प्रभावित हो सकते हैं। टीनएज की लड़कियां या लड़के, अक्सर स्कूली दिनों में इससे ग्रसित हो जाते हैं। ऐसे में बच्चे के माता-पिता को खास ध्यान रखना चाहिए। पिछले दशक में

## कौन रैसिपीज : मसाला कौन इन पापड़ कोन



- सामग्री**
- 1 कप कौन उबले
  - 2 बड़े पापड़
  - 1 छोटा चम्मच चाटमसाला
  - 1 बड़ा चम्मच मक्खन
  - 2 छोटे चम्मच नींबू का रस
  - 1/4 कप अनार के दाने, नमक स्वादानुसार
- विधि**

उबले कौन में मक्खन, चाटमसाला, नींबू का रस और नमक मिलाएं, पापड़ को बीच से आधा करें। आंच में पापड़ सेंकें और गरमगरम में ही कोन की तरह मोड़ दें। पापड़ कोन तैयार हैं। इन में मसाला कौन भरें और ऊपर से अनार के दाने बुरक कर तुरंत सर्व करें।

क्लीनिकल अध्ययन में यह स्पष्ट हो चुका है कि यह मानसिक विकार, दवाइयां और थैरेपी के माध्यम से सही किया जा सकता है। इसके उपचार में कुछ दवाइयां को नियमित रूप से निश्चित समय तक दिया जाता है ताकि व्यक्ति खुद को

## मुलतानी मिट्टी के दस प्रमुख स्वास्थ्य लाभ

मुलतानी मिट्टी को प्राकृतिक फेस पैक और प्राकृतिक कंडीशनर कहा जाता है। त्वचा को निखारने, बालों की समस्याओं से निजात दिलाने के अलावा यह यकान भी दूर करती है। मुलतानी मिट्टी में कई प्रकार के मिनरल्स जैसे - मैग्नीशियम, वार्डन, सिलिका, आयरन, कैल्शियम, कैल्साइट आदि पाये जाते हैं। बाजार में मिलने वाले विभिन्न प्रकार के सौंदर्य उत्पादों में इसका प्रयोग किया जाता है। यह आसानी उपलब्ध है।



**चेहरे को निखारें:** चेहरे को निखारने के लिए मुलतानी मिट्टी से बने फेस पैक का प्रयोग कीजिए। मुलतानी मिट्टी, मलाई, शहद, बेसन, गुलाबजल को बराबर मात्रा में लेकर इसका पेस्ट बना लीजिए, इसे चेहरे पर लगाकर 20 मिनट बाद चेहरे को हल्के गुनगुने पानी से धो लें। चेहरा खिल उठेगा।

**तैलीय त्वचा के लिए:** तैलीय त्वचा में कौल-मुहासे होने की अधिक आशंका होती है। चेहरे में अधिक मात्रा में मौजूद तेल को सोखने के लिए मुलतानी मिट्टी का प्रयोग कीजिए। मुलतानी मिट्टी, गुलाबजल, चंदन पावडर बराबर मात्रा में लेकर पेस्ट बनाकर, इसे चेहरे पर लगायें। सूखने के बाद हल्के गुनगुने पानी से चेहरा साफ कर लें।

**कौल मुहासे होने पर:** कौल मुहासे होने पर दो छोटे चम्मच पिसी हुई मुलतानी मिट्टी एक छोटा चम्मच नींबू का रस, एक छोटा चम्मच बेसन और थोड़ी सी हल्दी मिलाकर लेप बनाएं। इस लेप को नियमित चेहरे पर लगाने से मुहासे दूर हो जायेंगे।

**त्वचा का कालापन:** त्वचा का कालापन दूर करने के लिए 2 चम्मच मुलतानी मिट्टी, 1 चम्मच सरसों का तेल, 1 चम्मच मलाई, 1 चम्मच बेसन व थोड़ी सी हल्दी लेकर पेस्ट बना लीजिए। इसे पेस्ट को नहाने से पहले पूरी त्वचा पर लगाने से त्वचा का कालापन दूर होता है।

**झुर्रियां होने पर:** झुर्रियों के लिए मुलतानी मिट्टी का प्रयोग कीजिए, 2 चम्मच मुलतानी मिट्टी, 5 बादाम की गिरि व 4 चम्मच खीरे का रस मिलाकर पेस्ट बना लीजिए। इस पेस्ट को सप्ताह में एक बार चेहरे पर लगाने से झुर्रियों की समस्या दूर होगी।

**घने बालों के लिए:** मुलतानी मिट्टी त्वचा के अलावा बालों की समस्या से भी निजात दिलाती है। 2 बड़े चम्मच मुलतानी मिट्टी, 1 बड़ा चम्मच दही, 1 बड़ा चम्मच नींबू का रस मिलाकर बालों पर लगाएं। बालों पर लगाने के 20 मिनट बाद बालों को धो लें, नियमित इसका प्रयोग करने से आपके बाल काले, घने और मुलायम होंगे।

# बीमारी नहीं विकार है ओसीडी



बैलेंस कर सके और अपने मूड स्वींग पर काबू पा सकें, थैरेपी से उसे सही और गलत के बारे में बताया जाता है। यह कोई शर्मनाक बीमारी नहीं है, जो कि लाइलाज हो, यह एक प्रकार का विकार है, जिसे आसानी से ठीक किया जा सकता है।



# मध्य प्रदेश सरकार का सिरदर्द बढ़ रहे पंचायती राज संगठन

भोपाल। पंचायत चुनाव से पहले पंचायत संगठनों ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। त्रिस्तरीय पंचायतराज संगठन का आरोप है कि सरकार ने वादाखिलाफी की है। भाजपा सरकार ने अधिनियम में संशोधन कर जनप्रतिनिधियों के अधिकारों में जो कटौती की थी, उसे अभी तक वापस नहीं लिया गया है। वहीं, जिला और जनपद पंचायत के प्रतिनिधियों को विवेकाधीन राशि भी रोक ली है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के काम ठप पड़ गए हैं। इसको लेकर पंचायत प्रतिनिधियों में नाराजगी है और वे आंदोलन की रणनीति बनाने के लिए मंगलवार को भोपाल के मानस भवन में बैठक करेंगे। प्रदेश में ग्राम पंचायत, जनपद और जिला पंचायतों के चुनाव को लेकर प्रक्रिया शुरू हो गई है। हर स्तर पर आरक्षण का काम चल रहा है, जो 10 जनवरी तक पूरा होना है। इसके बाद जिला



पंचायत के अध्यक्ष पद का आरक्षण राज्य स्तर से होगा। उधर, सरकार ने जिला और जनपद पंचायत के प्रतिनिधियों को मिलने वाली सालाना विवेकाधीन राशि जारी करने पर रोक लगा दी है।

जबकि, पिछली बार जब पंचायत प्रतिनिधि भोपाल में पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री कमलेश्वर पटेल के निवास पर जुटे थे, तब यह सहमति बनी थी कि राशि जारी कर दी जाएगी, लेकिन इस पर

अमल नहीं हुआ। उधर, पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह की मौजूदगी में तत्कालीन अपर मुख्य सचिव गौरी सिंह के साथ हुई बैठक में अधिकारों के विकेंद्रीकरण को लेकर भी सहमति बन गई थी। इसके भी आदेश विभाग ने नहीं निकाले हैं। इन सभी मुद्दों को लेकर चुने हुए पंचायत प्रतिनिधियों में नाराजगी है। इसको लेकर मंगलवार को सभी पदाधिकारी भोपाल के मानस भवन में बैठक करके आगामी रणनीति बनाएंगे। सूत्रों का कहना है कि बैठक के बाद पदयात्रा भी निकाली जा सकती है।

हर जिले से आएंगे प्रतिनिधि - त्रिस्तरीय पंचायतराज संगठन के संयोजक रत्नलाल जिला पंचायत के उपाध्यक्ष डीपी धाकड़ का कहना है कि हर जिले से चुने हुए प्रतिनिधि भोपाल पहुंच रहे हैं। बैठक में पंचायतों को अधिकार संपन्न बनाने की लड़ाई पहले की तरह जारी रहेगी।



## नर्मदा परिक्रमा पथ को सर्वसुविधायुक्त बनाया जाएगा : मंत्री शर्मा

भोपाल - जनसम्पर्क एवं आध्यात्म मंत्री श्री पी.सी. शर्मा ने कहा है कि राज्य सरकार नर्मदा परिक्रमा पथ को सर्वसुविधायुक्त बनाएगी। इसके लिये शीघ्र ही ट्रस्ट गठित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट के माध्यम से नर्मदा नदी के तटों, परिक्रमा

स्थल और मंदिरों का जीर्णोद्धार किया जाएगा। श्री शर्मा इंदौर में नर्मदीय समाज के वार्षिक समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में उन्होंने समाज में अच्छा काम करने वालों का सम्मान किया।

पुजारियों का मानदेय तीन गुना तक बढ़ाया गया है। उन्होंने कहा कि बुजुर्ग समाज की सम्पदा है। उनके ज्ञान, अनुभव और तपस्या से नई पीढ़ी को सीखना चाहिये। श्री शर्मा ने समारोह में प्रो. बालकृष्ण निलोसे और श्री प्रभाकर चौरों को लाईफ टाइम अवार्ड से सम्मानित किया।

### परीक्षा केन्द्रों पर मोबाइल पूर्णतः प्रतिबंधित

भोपाल। माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश भोपाल के निर्देशन में हायर सेकेण्डरी और हाईस्कूल की परीक्षायें क्रमशः 2 एवं 3 मार्च से प्रारंभ होंगी। परीक्षाओं को स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण सम्पन्न कराने के लिये सभी परीक्षा केन्द्रों पर अधिकारियों की इयूटी लगा दी गई है। परीक्षा केन्द्र पर मोबाइल पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा, अगर केन्द्राध्यक्ष या कलेक्टर प्रतिनिधि मोबाइल परीक्षा केन्द्र पर लेकर पहुंच भी जाते हैं तो परीक्षा प्रारंभ होने के आठ घण्टे पूर्व मोबाइल को स्कूल की अलमारी में लॉक कर रख दें।

### चना, मसूर एवं सरसों के पंजीयन की अंतिम तिथि आज

भोपाल। रबी विपणन वर्ष 2020-21 में चना, मसूर एवं सरसों को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपार्जन के लिए पंजीयन की अंतिम तिथि 02 मार्च है। जिला आपूर्ति अधिकारी ने बताया कि जिले में चना, मसूर एवं सरसों के समर्थन मूल्य पर उपार्जन के लिए पंजीयन एवं सत्यापन की प्रक्रिया गेहूँ उपार्जन के अंतर्गत की जाने वाले कार्यवाही के अनुसार ही की जायेगी। गेहूँ के पंजीयन के लिए बनाए गए केन्द्रों पर ही चना, मसूर एवं सरसों का पंजीयन किया जाएगा। जिले के किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ लेने के लिए 02 मार्च 2020 तक अपनी फसलों का पंजीयन अवश्य करावें।

### किसान एमपी ऑनलाइन के कियोस्क सेंटर से प्राप्त कर सकते हैं भू-अभिलेख की प्रतिलिपियां

भोपाल। प्रदेश में किसानों को भू-अभिलेखों की प्रतिलिपियां प्राप्त करने के लिए प्रेरान न होना पड़े, इसके लिए राजस्व विभाग द्वारा किसानों को नवीन सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। अभी किसानों को भू-अभिलेख खसरा एवं बी-1 की प्रतिलिपि तहसील स्थित आईटी सेंटरों तथा लोक सेवा केन्द्रों के माध्यम से आवेदन करने पर तुरंत उपलब्ध कराई जा रही है। इसी दिशा में एक ओर कदम बढ़ाते हुए राजस्व विभाग द्वारा भू-अभिलेखों की प्रति निर्धारित दरों पर भू-स्वामियों को प्रदाय करने के लिए एमपी ऑनलाइन को प्राधिकृत सेवा प्रदाता नियुक्त किया गया है। आयुक्त भू-अभिलेख मध्यप्रदेश के निर्देशानुसार जिले के सभी एमपी ऑनलाइन कियोस्क केन्द्रों पर एमपी वेबजीआईएस सॉफ्टवेयर के माध्यम से आम नागरिकों को शासन द्वारा निर्धारित दरों पर भू-अभिलेख की प्रतिलिपियां प्रदाय करना प्रारंभ किया जा रहा है। जिससे किसानों को भू-अभिलेख खसरा एवं बी-1 की प्रतिलिपि प्राप्त करने के लिए तहसीलों में नहीं आना पड़ेगा। किसान अपने निकटतम एमपी ऑनलाइन कियोस्क से भू-अभिलेख की प्रतिलिपि प्राप्त कर सकते हैं। शासन द्वारा एमपी ऑनलाइन कियोस्क के माध्यम से प्रतिलिपि प्राप्त करने के लिए दरें निर्धारित की गई हैं। जिसके तहत एक साला/पांच साला खसरा या खाता जमाबंदी, अधिकार अभिलेख, खेवट के प्रथम पृष्ठ के लिए 30 रूपए तथा प्रत्येक अतिरिक्त पृष्ठ के लिए 15 रूपए फीस निर्धारित की गई है। इसी प्रकार वाजिब-उल-अर्ज, निस्तार पत्रक के प्रथम पृष्ठ के लिए 30 रूपए एवं प्रत्येक अतिरिक्त पृष्ठ के लिए 15 रूपए और ए-4 आकार के नक्शे की प्रति के प्रथम पृष्ठ के लिए 30 रूपए तथा प्रत्येक अतिरिक्त पृष्ठ के लिए 15 रूपए की दर निर्धारित की गई है।

### सामान्य फोन से भी कॉलर की लोकेशन ट्रेस कर पहुंचती है डायल 100

भोपाल। पुलिस द्वारा आपातकालीन सहायता के लिए 100 डायल की व्यवस्था की गई है। सामान्य फोन से भी डायल 100 को फोन लगाने पर कॉलर्स की लोकेशन ट्रेस करके उसे तत्काल सहायता पहुंचायी जाती है। डायल 100 ने भोपाल सहित पूरे प्रदेश में अब तक 52 हजार से अधिक बुजुर्गों को सहायता पहुंचाई है। डायल 100 के राज्य स्तरीय कन्ट्रोल रूम में सम्पन्न कार्यक्रम में बताया गया कि दुर्घटना की सूचना मिलने पर डायल 100 का शत-प्रतिशत रिसपॉस होता है। डायल 100 से कन्ट्रोल रूम के 110 काल ट्रेसर्स तैनात हैं। कन्ट्रोल रूम 24 घंटे काम करता है। प्रदेश में एक हजार गाड़ियों तथा 150 मोटर साइकिलों से डायल 100 की सुविधा दी जा रही है। किसी भी प्रकार की अनहोनी होने पर पुलिस अधिकारियों को एम्पएमएस सिस्टम से सूचना दी जाती है। चूना देने वाले को पुलिस द्वारा को गैर कार्यवाही से अवगत भी कराया जाता है। डायल 100 लगातार गश्त लगाने का भी कार्य करती है जिससे बदमाशों की गिरगनी के साथ ही अपराध रोकने में मदद मिलती है।

### खाद्य प्र-संस्करण उद्योग से भी जुड़े किसान : मंत्री सचिन यादव



भोपाल। किसान-कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री श्री सचिन यादव ने किसानों से आग्रह किया है कि कृषि के साथ-साथ खाद्य-प्र-संस्करण उद्योग से भी जुड़ें। इससे फसल की सही कीमत मिलेगी और कृषि के साथ-साथ आय का वैकल्पिक स्रोत भी निर्मित होगा। श्री यादव खरगोन जिले के कसरवाव में दो दिवसीय चिली फेस्टिवल के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मंत्री श्री यादव ने कहा कि कृषि हमेशा से प्रदेश की अर्थ-व्यवस्था का आधार-

रहती है। इसके साथ उद्यानिकी और ख-1 घ-प-संस्करण जुड़ने से किसानों की आर्थिक सम्पन्नता के नये रास्ते खुले हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में खाद्य प्र-संस्करण उद्योग की अपार संभावनाएँ हैं। इसमें युवाओं को रोजगार मिलेगा और वे चाहें तो उद्यमी बनकर मालिक भी बन सकते हैं। श्री यादव ने बताया कि राज्य सरकार किसानों, युवाओं और महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिये हरसंभव सहयोग प्रदान करने के लिये कृषि-संस्कल्पित है। मंत्री श्री सचिन यादव ने इस मौके पर प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में गणमान्य नागरिक, कृषि वैज्ञानिक, किसान और खेती-किसानी से जुड़े अन्य लोग शामिल हुए।

## आरती पौराणिक गांव में जाकर देती है वृद्ध महिलाओं को पेंशन और बिल भी जमा करती है



दमोह (ब्यूरो)। जिले की प्रभारी सचिव अलका श्रीवास्तव कल कलेक्टर तरुण राठी के साथ बटियागढ़ समूह विकासखण्ड के ग्राम बकायन पहुंचीं। यहां ग्राम में चल रही स्व-सहायता समूहों की गतिविधियों का जायज

लीया। उन्होंने समूह की महिलाओं से विस्तृत चर्चा की और उनके कार्यों की सरहना भी की। इस मौके पर उन्होंने समूह द्वारा भेजे जा रहे उत्पादों को स्वयं के उपयोग हेतु खरीदा और उत्पादों का 215 रूपये भुगतान किया। इस मौके पर

### राज्य खाद्य आयोग का जिला दमोह में दो दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम जारी

दमोह। राज्य खाद्य आयोग द्वारा 04 मार्च 2020 एवं 05 मार्च को दमोह, जिले का भ्रमण कर सार्वजनिक वितरण प्रणाली पूरक पोषण आहार, मध्याह्न भोजन एवं प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजनाओं की समीक्षा एवं निरीक्षण किया जायेगा। इस भ्रमण कार्यक्रम में आयोग के सदस्य गोरेलाल अहिरवार उपस्थित रहेंगे। प्रथम दिवस के प्रथम सत्र- 04 मार्च को 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक कलेक्टर कार्यालय सभाकक्ष में जनप्रतिनिधियों के सुझाव प्राप्त करने हेतु एक बैठक आयोजित की जायेगी। बैठक में जिले के सांसद और (उनके प्रतिनिधि), विधायकगण (उनके प्रतिनिधि), जिला पंचायत के अध्यक्ष, जिला मुख्यालय के नगरपालिका के अध्यक्ष, मुख्यालय नगरपालिका के एमआईसी सदस्य, समस्त जनपद पंचायतों के अध्यक्ष जिले की अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति पंचायतों के सरपंच, स्वयंसेवी संगठन के प्रतिनिधि प्रत्येक विकास खण्ड से एक-एक एवं सहायता समूह की प्रतिनिधि को उपस्थिति भी प्रार्थनीय है।

## ग्राम पंचायतों के सचिव, रोजगार सहायकों का प्रशिक्षण 4 मार्च से

सतना (ब्यूरो)। वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत विकसित किये गये एमपी वन मित्र पोर्टल का जिला स्तर पर ई-दृष्ट केन्द्र सतना में प्रशिक्षण 4 मार्च से आयोजित किया गया है। प्रशिक्षण में वन अधिकार से संबंधित ग्राम पंचायतों के सचिव, ग्राम रोजगार सहायक को एमपी वन मित्र पोर्टल की प्रक्रिया के संबंध में जिला स्तर पर प्रशिक्षण दिनांक 04 मार्च से 20 मार्च तक आयोजित किया गया है। प्रशिक्षण दो पालियों में ई-गवर्नेंस मैनेजर श्री योगेश तिवारी एवं मास्टर ट्रेनर श्री नितिन धाकड़ वन मण्डल कार्यालय तथा श्री अजय सोधिथा आ.जा.क. विभाग द्वारा दिया जायेगा। आदिम जाति कल्याण विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार जनपद पंचायत मझगावां की ग्राम पंचायत चुर्वा, पिपरीकला, बरहा, पकारखुर्द, नयागांव, बैरहना, कलबलिया, हरिहरपुर, मेहुती, बांधी, डोमहाई तथा पगारकला का प्रशिक्षण 4 मार्च को होगा। जनपद पंचायत अमरपाटन की ग्राम पंचायत सरबका, मोहरियालालन, बरेहबड़ा, सनेहीबाड़ा, खुजुरीसदनन्दन, देवरी, कुम्हारों, नौगांव, परसवाही, ककरा, मगराछ, धोबहट, आमिन, पोडीकला, सिलपुरी, त्योंधरा, नं. 2, मदीबौरदत, सेरिया, रैकवार, धौहरा, बेला, करहोलासी, आनन्दगढ़, महूहट, लालपुर, सुआ का प्रशिक्षण 5 मार्च को होगा।

सुजावलखुर्द, मझगावां (झरी), किटहा, बेरहना (बांधी), तेलनी, अमिलिया, चंदई, मरवा, गलबल, झरी (जैतवारा), ग्राम पंचायत बम्हरी, खांच, गोडावां, करौंदीकला, रिमारी, सेजवार, खरहा, टेडीपतमनिया, पालदेव, पडमनियाका, खुटहा, सुकवाह, पिपरीकला, बरहा, पकारखुर्द, नयागांव, बैरहना, कलबलिया, हरिहरपुर, मेहुती, बांधी, डोमहाई तथा पगारकला का प्रशिक्षण 4 मार्च को होगा। जनपद पंचायत अमरपाटन की ग्राम पंचायत सरबका, मोहरियालालन, बरेहबड़ा, सनेहीबाड़ा, खुजुरीसदनन्दन, देवरी, कुम्हारों, नौगांव, परसवाही, ककरा, मगराछ, धोबहट, आमिन, पोडीकला, सिलपुरी, त्योंधरा, नं. 2, मदीबौरदत, सेरिया, रैकवार, धौहरा, बेला, करहोलासी, आनन्दगढ़, महूहट, लालपुर, सुआ का प्रशिक्षण 5 मार्च को होगा।

## स्वास्थ्य ही हमारी असली दौलत होती है - कमिश्नर

### घोघर में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित

रीवा (ब्यूरो)। जिले के प्रभारी मंत्री लखन घनघोरिया के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में कमिश्नर रीवा संभाग डॉ. अशोक कुमार भार्गव के मुख्य आतिथ्य में श्रम कल्याण मैदान घोघर में निःशुल्क विशाल स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। शिविर में जिला चिकित्सालय सहित अन्य शासकीय चिकित्सालयों में पदस्थ चिकित्सकों ने आमजनों का स्वास्थ्य परीक्षण कर निःशुल्क दवाइयों वितरित की। शहरी स्लम क्षेत्रों में शासन द्वारा जिला स्वास्थ्य समिति के माध्यम से इस तरह के शिविरों का आयोजन समय-समय पर किया जा रहा है। इस अवसर पर सामाजिक न्याय एवं निश्चिन्ता कल्याण विभाग द्वारा संचालित जिला निश्चिन्ता पुनर्वास केन्द्र द्वारा दिव्यांगजनों को व्हील चेयर एवं अन्य उपकरणों का वितरण किया



गया। शिविर में मौके पर आयुष्मान कार्ड भी बनाकर प्रदान किए गए। कमिश्नर डॉ. भार्गव ने इस अवसर पर कहा कि वास्तव में स्वास्थ्य ही हमारी असली दौलत होती है। लोगों के स्वास्थ्य को अच्छा बनाये रखने के लिए इस तरह के स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन राज्य शासन द्वारा निरंतर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर से ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। इसलिए लोगों को अपनी स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए। स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए अपना आचार-विचार, आहार-विहार अच्छा

रखने की कोशिश करनी चाहिए। शिविर में अपने विचार रखते हुए शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सरदार गुरमीत सिंह मंगू ने कहा कि हर व्यक्ति स्वस्थ रहेगा तो देश का विकास होगा। कार्यक्रम में ग्रामीण अध्यक्ष त्रियुगीनारायण शुक्ला ने भी अपने विचार रखे। शिविर

का आयोजन विभिन्न विभागों के सहयोग से सरदार गुरमीत सिंह मंगू द्वारा कराया गया। उन्होंने बताया कि आगे भी शहर में इसी तरह के शिविर आयोजित कराये जायेंगे। क्रमांक-01-735-सिंह-फोटो क्रमांक 01, 02, 03, 04 संलग्न हैं।

### वनाधिकार के दावे आपत्तियाँ 20 मार्च तक ऑनलाइन फीड करें - कलेक्टर

रीवा। कलेक्टर बसंत कुंरे ने वनाधिकार अधिनियम के अन्तर्गत प्राप्त दावों को ऑनलाइन फीड करने संबंधी आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए निर्देश दिये कि एमपी वन मित्र सॉफ्टवेयर के माध्यम से प्राप्त आपत्ति एवं दावों को 20 मार्च तक ऑनलाइन फीड करें। बैठक में जिला पंचायत सीईओ अर्पित वर्मा, आदिम जाति कल्याण विभाग के जिला संयोजक संतोष सिंह तिवारी एवं अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर ने कहा कि वनाधिकार अधिनियम के अन्तर्गत निरस्त किये गये दावों का 9 अप्रैल तक सत्यापन कर लिया जाय। आगामी 14 अप्रैल को आयोजित ग्राम सभा से सत्यापन किये गये निरस्त दावों का अनुमोदन कराया जाय। इसके उपरंत प्राप्त दावों को उपखण्ड स्तर पर सत्यापन किया जाय तत्पश्चात जिला स्तर पर जून माह तक समिति द्वारा अनुमोदन कर लिया जाय।



# 44 मैच बाद लिवरपूल की पहली हार, सत्रहवें नंबर की टीम वाटफोर्ड ने बड़ा उलटफेर कर 3-0 से मात दी



## फिट्ज को हराकर नडाल ने जीता 2020 का पहला खिताब

दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी राफेल नडाल ने शनिवार को यहां गैरवरीय टेलर फिट्ज को सीधे सेटों में हराकर एटीपी मैक्सिको ओपन का खिताब जीत लिया। यह 2020 का उनका पहला खिताब है। नडाल ने अमेरिका के फिट्ज को 6-3, 6-2 से हराकर तीसरी बार मैक्सिको ओपन का खिताब जीता इससे पहले वह 2013 और 2015 में भी यहां खिताब जीत चुके हैं। नडाल के करियर का यह 85वां खिताब है। पिछले महीने ऑस्ट्रेलिया ओपन के क्वार्टर फाइनल में हार के बाद पहला टूर्नामेंट खेल रहे 33 साल के नडाल ने टूर्नामेंट के दौरान एक भी सेट नहीं गंवाया। इस टूर्नामेंट में नडाल की यह 19वीं जीत है जबकि दो बार उन्हें हार का सामना करना पड़ा है।



## आर्सेनल को हराकर चेल्सी ने जीता कॉन्टिनेंटल कप का खिताब

नई दिल्ली ए.। चेल्सी ने शनिवार को इंग्लैंड के फुटबॉल क्लब आर्सेनल को फाइनल में हराकर पहली बार कॉन्टिनेंटल कप का खिताब अपने नाम किया। नॉटिंघम के सिटी ग्राउंड स्टेडियम में खेले गए इस मुकाबले में चेल्सी ने चिर-प्रतिद्वंद्वी आर्सेनल को 2-1 से हरा दिया।

## पेत्रा को हराकर आर्यना साबलेका ने जीता कतर ओपन का खिताब

नई दिल्ली। बेलारूस की आर्यना साबलेका ने शनिवार को कतर ओपन का खिताब अपने नाम कर लिया। खिताबी मुकाबले में साबलेका ने चेक गणराज्य की पेत्रा क्रितोवा को 6-3, 6-3 से हरा दिया। दो बार की विंबलडन विजेता क्रितोवा ने बार्टी को 6-4, 2-6, 6-4 से हराया और अपने करियर में 37वीं बार डब्ल्यूटीए फाइनल में जगह बनाई थी। दोहा में वह दूसरी बार फाइनल में पहुंची थीं।

## जोकोविच ने पांचवीं बार जीता दुबई ओपन का खिताब, फाइनल में सितसिपास को हराया



नई दिल्ली ए.। विश्व के नंबर एक खिलाड़ी और टॉप सीड सर्बिया के नोवाक जोकोविच ने शनिवार को दुबई ओपन टेनिस टूर्नामेंट का खिताब जीत लिया है। फाइनल में उन्होंने ग्रीक स्टाइल स्टेफानोस सितसिपास को 6-3, 6-4 से हरा दिया। उन्होंने पांचवीं बार दुबई ओपन टेनिस टूर्नामेंट का खिताब अपने नाम किया। अगर जोकोविच के करियर की बात की जाय तो यह उनके करियर का 79वां टाइटल है इससे पहले जोकोविच ने सेमीफाइनल में उन्होंने फ्रांस के खिलाड़ी गेल मोनफिल्स को 2-6, 7-6 (10/8), 6-1 से हराकर दुबई ओपन टेनिस टूर्नामेंट के फाइनल में अपनी जगह पक्की की थी। वहीं, क्वार्टरफाइनल मुकाबले में जोकोविच ने कारेन काचनोव को सीधे सेटों में 6-2, 6-2 से हराकर दुबई ओपन टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया था।

## कोरोनावायरस से टूर्नामेंट रद्द होने के कारण ओलंपिक वचालीफिकेशन समय बढ़े

नई दिल्ली ए.। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल और पारुपल्ली कश्यप का मानना है कि नोवेल कोरोनावायरस के कारण टोक्यो ओलंपिक के क्वालीफाइंग टूर्नामेंट रद्द होने के कारण विश्व बैडमिंटन महासंघ (बोडब्ल्यूएफ) को क्वालीफिकेशन समय को बढ़ाना चाहिए। घातक कोरोना वायरस से जुड़ी चिंताओं के कारण अब तक चार ओलंपिक क्वालीफाइंग प्रतियोगिताएं रद्द हो चुकी हैं जिसमें चीन मास्टर्स (25 फरवरी से एक मार्च), वियतनाम अंतरराष्ट्रीय चैलेंज (24 से 29 मार्च), जर्मन ओपन (तीन से आठ मार्च) और पोलिश ओपन (26 से 29 मार्च) शामिल हैं। साइना ने बीडब्ल्यूएफ और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) को टैग करते हुए ट्वीट किया कि अगर कोरोना वायरस के कारण टूर्नामेंट रद्द हो रहे हैं तो क्वालीफिकेशन समय बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यह उन खिलाड़ियों के लिए अनुचित होगा जो ओलंपिक 2020 के लिए क्वालीफाइ करने के करीब हैं। लंदन ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता साइना 'रेस टू टोक्यो' सूची में अभी 22वें स्थान पर चल रही हैं और टोक्यो में जगह बनाने के लिए उन्हें कुछ अच्छे नतीजे हासिल करने होंगे। साइना के पति और 2014 के राष्ट्रमंडल चैंपियन कश्यप तथा दुनिया के पूर्व नंबर एक खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत क्रमशः 24वें और 21वें स्थान पर हैं।

खेल डेस्क ए.। इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) में 17वें नंबर की टीम वाटफोर्ड ने बड़ा उलटफेर करते हुए टॉप टीम लिवरपूल को 3-0 से हरा दिया। ईपीएल में लिवरपूल ने जनवरी 2019 से अब तक 44 मैच खेले, उसे 45वें मैच में हार मिली है। वाटफोर्ड के इस्माइला सार ने दूसरे हाफ में 6 मिनट के अंदर 2 गोल दागे। यह गोल 54वें और 60वें मिनट में किए। एक अन्य गोल ट्रॉय डीनी ने 72वें मिनट में किया।

लिवरपूल की इस सीजन में यह 28



मैच बाद पहली हार है। पिछले मैच में लिवरपूल ने वेस्ट हैम यूनाइटेड को 3-2 से हराया था। इस जीत के साथ ही लिवरपूल ने ईपीएल में मैनचेस्टर सिटी के लगातार 18 मैच जीतने के रिकॉर्ड की बराबरी की थी। सिटी ने अगस्त से दिसंबर 2017 के बीच लगातार 18 मैच जीते थे।

## लिवरपूल 79 पॉइंट के साथ अंक तालिका में शीर्ष पर

हार के बावजूद लिवरपूल

प्रीमियर लीग में 79 अंक के साथ शीर्ष पर है। टीम ने 28 में से 26 मुकाबले जीते, 1 हारा और 1 ड्रॉ रहा। अभी उसे प्रीमियर लीग में 11 मैच और खेलने हैं। दूसरे स्थान पर मौजूद मैनचेस्टर सिटी ने 27 मैच खेले हैं। इसमें उसे 18 में जीत मिली, जबकि 6 हारे और 3 मुकाबले ड्रॉ रहे। उसके 57 अंक हैं। वाटफोर्ड के 28 मैच में 27 अंक हैं। टीम ने 6 मैच जीते, 13 हारे और 9 ड्रॉ खेले हैं।

# क्राइस्टचर्च टेस्ट: दूसरे दिन भारत का स्कोर 90/6, न्यूजीलैंड पर 97 रन की बढ़त, कोहली 4 पारी में सिर्फ 38 रन बना सके

भारत के चेतेश्वर पुजारा ने 24 और पृथ्वी शॉ ने 14 रन बनाए; विहारी और पंत क्रीज पर

पहली पारी में भारत ने 242 रन बनाए, न्यूजीलैंड की टीम 235 रन पर आलआउट

नई दिल्ली ए.। भारतीय टीम ने न्यूजीलैंड के खिलाफ क्राइस्टचर्च टेस्ट की दूसरी पारी में 6 विकेट पर 90 रन बना लिए हैं। पहली पारी में टीम इंडिया ने 242 रन बनाए थे। मैच में रविवार को न्यूजीलैंड पहली पारी में 235 रन बना सकी थी। इस लिहाज से भारत ने कोवी टीम के खिलाफ 97 रन की बढ़त बना ली है। हनुमा विहारी (5) और ऋषभ पंत (1) नाबाद हैं। कप्तान विराट कोहली सीरीज की लगातार चौथी पारी में बड़ा स्कोर बनाने में असफल रहे। उन्होंने वेलिंगटन मैच में 2 और 19 रन बनाए थे। जबकि इस टेस्ट में 3 और 14 रन ही बना सके। दो टेस्ट की सीरीज में न्यूजीलैंड 1-0 से आगे है। न्यूजीलैंड के ट्रेट बोल्ट ने 3 भारतीय खिलाड़ियों मयंक अग्रवाल, चेतेश्वर पुजारा और उमेश यादव को आउट किया। उन्होंने मयंक को 3 रन पर एलबीडब्ल्यू किया। पुजारा 24 रन बनाकर बोल्ट को गेंद पर बोल्ड हो गए। वहीं, नाइट वॉचमैन के तौर पर बल्लेबाजी करने आए उमेश 1 रन बनाकर उनको गेंद पर बोल्ड हुए।

## कोहली को वैंडहेम ने एलबीडब्ल्यू किया

इनके अलावा अजिंक्य राहुने 9 रन बनाकर नील वैगनर को गेंद पर बोल्ड हुए। कोहली को कौलिन डी ग्रैंडहोम ने एलबीडब्ल्यू किया। पहली पारी में अर्धशतकीय पारी खेलने वाले पृथ्वी शॉ 14 रन बनाकर जल्दी पवेलियन लौट गए। टिम साउदी को गेंद पर उनका कैच टॉम लाथम ने लिया।

## जैमिंसन-वैगनर के बीच 9वें विकेट के लिए 51 रन की साझेदारी

न्यूजीलैंड की पहली पारी में टॉम लाथम ने 52, काइल जैमिंसन ने 49 और टॉम ब्लेंडल ने 30 रन की पारी खेली। जैमिंसन ने नील वैगनर के साथ 9वें विकेट के लिए 51 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी की। हालांकि वे अपने करियर का पहला अर्धशतक लगाने से चूक गए। कोहली ने 69 दिन से शतक नहीं लगाया



## कोहली ने 69 दिन से शतक नहीं लगाया

कोहली के क्रिकेट करियर में यह तीसरा मौका है, जब वे 69 दिन तक तीनों फॉर्मेट (वनडे, टेस्ट और टी-20) में एक भी शतक नहीं लगा सके। इस दौरान कोहली ने तीनों फॉर्मेट में 22 पारियां खेलीं। पिछला शतक उन्होंने 22 दिसंबर को कोलकाता टेस्ट में बांग्लादेश के खिलाफ 136 रन की पारी खेली थी। इससे पहले कोहली 25 फरवरी से अक्टूबर 2014 के बीच करीब 210 दिन और 24 फरवरी से सितंबर 2011 तक करीब 180 दिन में एक भी शतक नहीं लगा पाए थे साथ ही तीनों फॉर्मेट की पिछली 10 पारियों में कोहली ने सिर्फ 204 रन ही बनाए हैं। इस मैच की पहली पारी में कोहली 15 गेंद पर 3 रन बनाकर आउट हो गए थे। उन्हें

टिम साउदी ने एलबीडब्ल्यू किया था। मौजूदा न्यूजीलैंड दौर पर भारतीय कप्तान ने 7 वनडे और टी-20 में केवल 180 रन ही बनाए, जिसमें केवल एक अर्धशतक शामिल था। कोहली ने वेलिंगटन टेस्ट की पहली पारी में 2 और दूसरी पारी में 19 रन बनाए थे। यह मैच भारत 10 विकेट से हारा था। शमी ने 4 और बुमराह ने 3 विकेट लिए। भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने 4, जसप्रीत बुमराह 3, रविंद्र जडेजा 2 और उमेश यादव ने 1 विकेट लिया। बीजे वाटलिंग और टिम साउदी को बुमराह ने एक ही ओवर में आउट किया। रविंद्र जडेजा ने कॉलिन डी ग्रैंडहोम को 26 रन पर क्लीन बोल्ड कर दिया। इससे पहले मोहम्मद शमी ने 5वें विकेट के रूप में हेनरी निकोल्स को विराट कोहली के हाथों कैच आउट कराया। उन्होंने 14 रन बनाए।

## जडेजा ने करीब 3 फीट उछलकर कैच लिया

शमी ने न्यूजीलैंड के 4 खिलाड़ी लाथम, हेनरी निकोल्स, काइल जैमिंसन और नील वैगनर को पवेलियन भेजा। उन्होंने सबसे पहले लाथम को क्लीन बोल्ड किया। जबकि 14 रन बनाकर खेल रहे निकोल्स को कोहली के हाथों कैच आउट कराया।

# पूर्व हॉकी खिलाड़ी बलबीर सिंह खुल्लर का निधन

नई दिल्ली ए.। पूर्व हॉकी खिलाड़ी बलबीर सिंह खुल्लर का निधन हो गया है। हॉकी इंडिया ने रविवार को यह जानकारी दी। बलबीर 77 साल के थे और 1968 में ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय टीम का हिस्सा रह चुके हैं। हॉकी इंडिया ने ट्वीट किया कि हमें अपने पूर्व हाकी खिलाड़ी और दो बार ओलंपिक पदक विजेता टीम के सदस्य रहे बलबीर सिंह खुल्लर की मौत का दुख है।

उन्होंने कहा कि हम उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं। इस दुख के समय में हॉकी इंडिया की ओर से हमारी प्रार्थनाएं बलबीर सिंह खुल्लर और उनके मित्रों के साथ हैं। पंजाब के जालंधर जिले के संसारपुर में जन्में बलबीर ने 1963 में फ्रांस के



लियोन में भारत की ओर से पदार्पण किया। उन्होंने भारतीय टीम में इनसाइड फारवर्ड के रूप में प्रतिष्ठा हासिल की और बेल्जियम, इंग्लैंड, नीदरलैंड और पश्चिम जर्मनी जैसे देशों का दौरा किया। बलबीर 1966 में बैंकाक एशियाई खेलों में स्वर्ण और 1968 में मैक्सिको में हुए ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय टीम के सदस्य थे।

## द्रोणाचार्य पुरस्कार विजेता एथलेटिक्स कोच सैनी का 92 वर्ष की उम्र में निधन

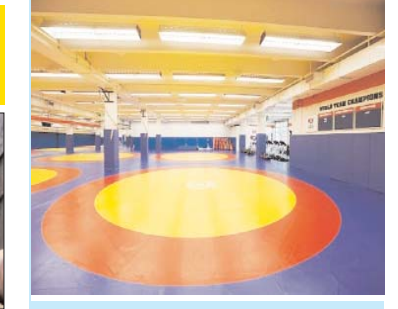
नई दिल्ली ए.। भारत के अनुभवी एथलेटिक्स कोच और द्रोणाचार्य पुरस्कार विजेता जोगिंदर सिंह सैनी का 90 वर्ष की उम्र में रविवार को निधन हो गया। देश को ट्रैक एवं फ़िल्ड के क्षेत्र में कई स्टार खिलाड़ी देने वाले सैनी पिछले कुछ समय से बहती उम्र से संबंधित परेशानियों से जूझ रहे थे। सैनी को भारत के कुछ प्रतिष्ठित ट्रैक एवं फ़िल्ड खिलाड़ियों को निखारने का श्रेय जाता है। वह 1970 से 1990 के दशक के बीच कई वर्षों तक राष्ट्रीय एथलेटिक्स टीम के मुख्य कोच रहे। उनके निधन पर एएफआई अध्यक्ष आदिले सुमारिवाला ने कहा, "मुझे अपने साथी, अपने मुख्य कोच और मंटर जेएस सैनी के निधन की खबर सुनकर बेहद दुख हुआ।

## होली से पहले उपभोक्ताओं को तोहफा, 52 रुपये सस्ता हुआ गैस सिलिंडर

नई दिल्ली ए.। होली से पहले रसोई गैस उपभोक्ताओं को तोहफा देते हुए सरकार ने घरेलू गैस सिलिंडर के दाम में कमी की है। आज यानी एक मार्च से गैर सब्सिडी वाला रसोई गैस सिलिंडर (14.2 किलोग्राम) 52.50 रुपए सस्ता हो गया है। अभी तक 893.50 रुपए में मिलने वाला घरेलू सिलिंडर मार्च माह में 841 रुपए की मिलेगा। बता दें कि हर माह की पहली तारीख को देश में रसोई गैस सिलिंडर की कीमत में बदलाव होता है। हालांकि फरवरी माह में 12 तारीख को इसमें



बदलाव किया गया था। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के अनुसार, फरवरी में दिल्ली में 14.2 किलो वाला सिलिंडर 144.50 रुपये महंगा हुआ था।



## बिश्केक में अब नहीं होगी एशियाई ओलंपिक वचालीफाइंग कुश्ती

किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में अब अगले महीने एशियाई ओलंपिक क्वालीफाइंग कुश्ती नहीं होगी। बिश्केक ने घातक कोरोना वायरस के फैलने की आशंका के मद्देनजर इसकी मेजबानी से हटने का फैसला किया है। यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग (यूडब्ल्यूडब्ल्यू) ने सभी एशियाई कुश्ती संघों को सूचित कर दिया है कि अब बिश्केक इस टूर्नामेंट की मेजबानी नहीं करेगा। यह क्वालीफाइंग पहले 27 से 29 मार्च तक चीन के जियान में आयोजित किया जाना तय था लेकिन वहां कोरोना वायरस के फैलने के चलते वहां की बजाय बिश्केक में कराए जाने का फैसला किया था। इस खतरनाक वायरस से दुनिया भर में कुछ हजार से ज्यादा लोगों के जान गंवाने की खबर है। किर्गिस्तान सरकार ने अगली सूचना तक देश में होने वाले सभी खेल आयोजन को टालने का फैसला किया है। यूडब्ल्यूडब्ल्यू को किर्गिस्तान सरकार ने सूचित किया कि उसने अपने देश में कोरोना वायरस के फैलने के खिलाफ कदम उठाने के क्रम में अपने यहां बिश्केक में एशियाई ओलंपिक क्वालीफायर को भी रद्द करने का फैसला किया है। यूडब्ल्यूडब्ल्यू अब समाधान तलाशने के लिए अन्य विकल्पों पर अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति से अगले हफ्ते चर्चा जारी रखने का संकेत दिया है।

## कोरोनावायरस से टूर्नामेंट रद्द होने के कारण ओलंपिक वचालीफिकेशन समय बढ़े



नई दिल्ली ए.। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल और पारुपल्ली कश्यप का मानना है कि नोवेल कोरोनावायरस के कारण टोक्यो ओलंपिक के क्वालीफाइंग टूर्नामेंट रद्द होने के कारण विश्व बैडमिंटन महासंघ (बोडब्ल्यूएफ) को क्वालीफिकेशन समय को बढ़ाना चाहिए। घातक कोरोना वायरस से जुड़ी चिंताओं के कारण अब तक चार ओलंपिक क्वालीफाइंग प्रतियोगिताएं रद्द हो चुकी हैं जिसमें चीन मास्टर्स (25 फरवरी से एक मार्च), वियतनाम अंतरराष्ट्रीय चैलेंज (24 से 29 मार्च), जर्मन ओपन (तीन से आठ मार्च) और पोलिश ओपन (26 से 29 मार्च) शामिल हैं। साइना ने बीडब्ल्यूएफ और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) को टैग करते हुए ट्वीट किया कि अगर कोरोना वायरस के कारण टूर्नामेंट रद्द हो रहे हैं तो क्वालीफिकेशन समय बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यह उन खिलाड़ियों के लिए अनुचित होगा जो ओलंपिक 2020 के लिए क्वालीफाइ करने के करीब हैं। लंदन ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता साइना 'रेस टू टोक्यो' सूची में अभी 22वें स्थान पर चल रही हैं और टोक्यो में जगह बनाने के लिए उन्हें कुछ अच्छे नतीजे हासिल करने होंगे। साइना के पति और 2014 के राष्ट्रमंडल चैंपियन कश्यप तथा दुनिया के पूर्व नंबर एक खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत क्रमशः 24वें और 21वें स्थान पर हैं।

## जनवरी में बैंकों के ऋण की वृद्धि घटकर 8.5 फीसदी हुई: रिजर्व बैंक रिपोर्ट

नई दिल्ली ए.। बैंकों के ऋण की वृद्धि दर जनवरी 2020 में घटकर 8.5 फीसदी पर आ गई। एक साल पहले समान महीने में यह 13.5 फीसदी थी। मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र को ऋण की वृद्धि दर में बड़ी गिरावट से कुल ऋण की वृद्धि दर घटी है। भारतीय रिजर्व बैंक के आंकड़ों में यह जानकारी दी गई है। आंकड़ों के अनुसार, जनवरी 2020 में सेवा क्षेत्र को ऋण की वृद्धि दर 8.9 फीसदी रही। जनवरी 2019 में यह 23.9 फीसदी थी। समीक्षाधीन महीने में गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) को बैंकों के ऋण की वृद्धि दर घटकर 32.2 फीसदी पर आ गई, जो एक साल पहले समान महीने में 48.3 फीसदी रही थी। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार जनवरी में व्यक्तिगत ऋण



(पर्सनल लोन) खंड की वृद्धि दर 16.9 फीसदी रही। पर्सनल लोन के तहत आवास क्षेत्र को ऋण की वृद्धि 17.5 फीसदी रही, जो एक साल पहले समान महीने में 18.4 फीसदी रही थी। इसी के तहत शिक्षा के लिए कर्ज 3.1 फीसदी घट गया। जनवरी 2019 में शिक्षा के लिए ऋण 2.3 फीसदी घटा था इसी तरह शिक्षा और संबद्ध गतिविधियों के लिए ऋण की वृद्धि दर घटकर 6.5 फीसदी रह गई, जो एक साल पहले समान महीने में 7.6 फीसदी थी। उद्योग को ऋण की वृद्धि दर 5.2 फीसदी से घटकर 2.5 फीसदी रह गई। बैंकों के ऋण और जमा पर ताजा तिमाही आंकड़ों के अनुसार अक्टूबर-दिसंबर 2019 के दौरान बैंकों के ऋण की वृद्धि

दर घटकर 7.4 फीसदी रही, जो एक साल पहले समान तिमाही में 12.9 फीसदी रही थी। तिमाही के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की ऋण की वृद्धि दर 3.7 फीसदी रही, जबकि निजी क्षेत्र के बैंकों का ऋण 13.1 फीसदी बढ़ा। 14 फरवरी, 2020 को समाप्त पखवाड़े के दौरान बैंकों का ऋण 6.3 फीसदी बढ़कर 100.41 लाख करोड़ रुपये रहा। एक साल पहले समान पखवाड़े में यह 94.40 लाख करोड़ रुपये रहा था। आंकड़ों के अनुसार, समीक्षाधीन पखवाड़े में बैंकों का जमा 9.2 फीसदी बढ़कर 132.35 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया, जो एक साल पहले की समान अवधि में 121.19 लाख करोड़ रुपये रहा था।



# कार्यकर्ताओं के समर्पण से ही भाजपा का आज विशाल और विराट स्वरूप है- माया सिंह

## आजीवन सहयोग निधि को लेकर भाजपा जिला ग्वालियर महानगर की संगठनात्मक बैठक आयोजित

ग्वालियर ( न.सं. )। भारतीय जनता पार्टी ग्वालियर महानगर की संगठनात्मक जिला बैठक रविवार को भाजपा जिला कार्यालय मुखर्जी भवन में पूर्व मंत्री एवं आजीवन सहयोग निधि की संभार प्रभारी श्रीमती माया सिंह, सांसद विवेक नारायण शेजवलकर, जिलाध्यक्ष देवेश शर्मा, संभार सह प्रभारी एवं पूर्व जीडीए अध्यक्ष अभय चौधरी, जिला प्रभारी कमल माखीजानी, शरद गौतम, बृजेंद्र सिंह जादीन, राकेश माहौर की उपस्थिति में संपन्न हुई।

भाजपा कार्यालय पर आजीवन सहयोग निधि के विषय पर आहुत हुई बैठक का शुभारंभ पंडित दीनदयाल उपाध्याय, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित कर हुआ। बैठक का संचालन कमल माखीजानी

ने एवं आभार दीपक शर्मा ने व्यक्त किया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री श्रीमती माया सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ही एक मात्र ऐसा राजनैतिक दल है जो अपने कार्यकर्ताओं की मेहनत की कमाई से सहयोग राशि जो आजीवन सहयोग निधि के रूप में हर साल एकत्रित करके संगठन चलाने के लिए उपयोग करती है। उन्होंने कहा कि लाखों, करोड़ों कार्यकर्ताओं के समर्पण से ही आज भारतीय जनता पार्टी का विशाल और विराट स्वरूप दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि आजीवन सहयोग निधि का प्रत्येक मंडल को निश्चित लक्ष्य दिया है जिसे हर हाल में पूरा करना होगा, मेरी जहां आवश्यकता पड़े मैं आपका सहयोग करने के लिए हमेशा उपलब्ध रहूंगी।

बैठक को संबोधित करते हुए सांसद



विवेक नारायण शेजवलकर ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने अंकुश काल से ही अलग पहचान बनाई है। पार्टी आजीवन

सहयोग निधि के माध्यम से धन संग्रह करती है उसी धन का उपयोग प्रदेश कार्यालय सहित अन्य गतिविधियों में

किया जाता है। उन्होंने कहा कि भाजपा में पारदर्शिता से कार्य किया जाता है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता को यथाशक्ति आजीवन सहयोग निधि पार्टी को समर्पण करना चाहिए, उनके द्वारा दी गई निधि के माध्यम से ही पार्टी की विभिन्न गतिविधियां सुचारू रूप से संचालित होती हैं।

बैठक में रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए जिलाध्यक्ष देवेश शर्मा ने उपस्थित सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं से आग्रह किया आजीवन सहयोग निधि का लक्ष्य प्रदेश संगठन द्वारा दिया गया है वह आप सभी की मेहनत से पूरा होगा।

आजीवन सहयोग निधि के संभार सह प्रभारी एवं पूर्व जीडीए अध्यक्ष अभय चौधरी ने कहा कि प्रदेश संगठन जिले को जो भी लक्ष्य देता है उसे सभी कार्यकर्ता, पदाधिकारी पूरा करते हैं, संगठन की

अपेक्षा के अनुरूप सभी कार्यक्रम सफलता पूर्वक किए जाते हैं। आजीवन सहयोग निधि का काम भी आप सभी के सहयोग से ही पूरा किया जाएगा। आप सभी लोग संगठन के निर्देशानुसार अपना अपना लक्ष्य शीघ्र पूरा करेंगे ऐसा आपसे मेरा आग्रह है। इस अवसर पर रामेश्वर भदौरिया, संभागीय मीडिया प्रभारी पवनकुमार सेन, कमला सोनी, रमेश सेन, तिलकराज बैरी, रामप्रकाश परमार, प्रयाग तोमर, चेतन मंडलोई, बृजमोहन शर्मा, खुशबू गुसा, बलराम बघेल, भरत दांते, विवेक प्रताप सिंह चौहान, सतीश बोहरे, संतोष गोडयाले, राजू सेंगर, फैजल अली काजमी, प्रतीक तिवारी, चंद्रप्रकाश मिश्रा, विनय जैन, रेशु राजावत, रूकमणि जोशी, प्रीती थोराट, शर्मिला कुशवाहा, जगदीश राय आदि कार्यकर्ता मौजूद थे।

## केशर संचालक को लगाया एक करोड़ का चूना

ग्वालियर ( न.सं. )। सड़क बनाने के लिये दो टेकेदारों ने एक केशर संचालक से अनुबंध कर एक करोड़ से अधिक की गिट्टी खरीदी और जब पैमेंट करने का समय आया तो आरोपियों ने गिट्टी लेना बंद कर दिया। घटना विश्वविद्यालय थाना क्षेत्र के गोविंदपुरी की है। ठगी का पता चलते ही पीड़ित थाने पहुंचा और मामले की शिकायत की। पुलिस ने शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है।

विश्वविद्यालय थाना पुलिस ने बताया कि गोविंदपुरी निवासी बृजेश शर्मा पुत्र रामस्वरूप शर्मा केशर संचालक है और वर्ष 2014 में उनकी मुलाकात दिनेश व कपिल बलेचा से हुई थी। दोनों ने उसे बताया



कि वह टेकेदार है और उन्हें यूपी में सड़क बनाने का ठेका मिला है। साथ ही बताया कि रोड बनाने के लिये उन्हें काली व सफेद गिट्टी की जरूरत होगी। इस पर बृजेश उन्हें गिट्टी सप्लाई का अनुबंध कर लिया। इसके बाद वह माल लेते गये और जल्द पैमेंट

करने का वादा किया। जब उनके एक करोड़ से ज्यादा रूपये दिनेश व कपिल पर हो गये तो उन्होंने भुगतान करने का दबाव बनाया तो आरोपियों ने उनसे माल लेना बंद कर दिया। ठगी का अहसास होते ही पीड़ित थाने पहुंचा और शिकायत की।

## राज्य स्तरीय विश्वकर्मा पुरस्कार हेतु 30 अप्रैल तक शिल्पी आवेदन करें

ग्वालियर। संत रविदास मध्यप्रदेश हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम द्वारा राज्य स्तरीय विश्वकर्मा पुरस्कार वर्ष 2020-21 के लिए सिद्धस्थ शिल्पियों से कलाकृतियां आमंत्रित किए जाने हेतु आवेदन पत्र जिला स्तर पर 30 अप्रैल तक संत रविदास मध्यप्रदेश हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम कार्यालय या जिला ग्रामोद्योग अधिकारी कार्यालय जिला पंचायत में जमा कर सकते हैं। संत रविदास मध्यप्रदेश हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम मेला परिसर ग्वालियर के प्रभारी अधिकारी ने बताया कि राज्य स्तरीय विश्वकर्मा पुरस्कार 2020-21 के लिए सिद्धस्थ शिल्पियों से कलाकृतियां आमंत्रित की गई हैं। इसके लिए आवेदन पत्र जिला स्तर पर 30 अप्रैल 2020 तक प्राप्त किए जाएंगे। 30 सितम्बर 2020 कृति निर्माण एवं जिला स्तर पर जमा करने की अंतिम तिथि रहेगी।

## 500 साल बाद गुरु और शनि के योग में मनेगी होली

### शुभ फल के साथ होगी शांति स्थापित



ग्वालियर। इस बार सोमवार 9 मार्च को शुभयोग में होलिका दहन होगा। इस बार होली के अवसर पर शनि और गुरु का कई सालों बाद विशेष योग बन रहा है। यह योग इससे पहले वर्ष 1521 में 3 मार्च को बना

था। इस बार शनि और गुरु दोनों ही अपनी-अपनी राशि में रहेंगे। मार्च के अंत में गुरु अपनी राशि धनु से निकलकर शनि के साथ मकर राशि में आ जाएंगे। 9 मार्च सोमवार को इस बार

होलिका दहन होगा, जबकि 10 मार्च मंगलवार को होली खेली जाएगी। 9 मार्च को गुरु अपनी राशि धनु और शनि अपनी राशि मकर में रहेगा। इससे पहले यह दोनों ग्रह 3 मार्च 1521 को अपनी- अपनी राशियों में

विराजमान थे। होली पर शुक्र मेष राशि, मंगल केतु, धनु राशि में, राहु मिथुन राशि में, सूर्य और बुध कुंभ राशि में चंद्रमा सिंह राशि में रहेंगे। ग्रहों के योग में इस बार होली शुभ फल देने वाली रहेगी। वहीं देश में शांति स्थापित करवाने में भी सफल रहेगी। इसके साथ ही व्यापार के लिए भी यह योग हितकारी रहेगा। हर साल सूर्य कुंभ राशि और चंद्रमा सिंह राशि में होता तब होली का पर्व मनाया जाता है। होली से पहले 3 मार्च मंगलवार से होलाष्टक प्रारंभ हो जाएगा। शास्त्र के अनुसार फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक होलाष्टक रहता है। इस समय सभी ग्रह उच्च रूप में रहते हैं, इसलिए इस समय सभी प्रकार के शुभ कार्य करना वर्जित है। हालांकि मतिभ्रंता के चलते कुछ पंडित एक दिन पहले होलाष्टक का आरंभ बता रहे हैं।

## सकल जैन समाज की बैठक में महावीर जयंती की तैयारियों की हुई चर्चा

### जैन समाज और महावीर जयंती महोत्सव समिति की बैठक आयोजित की गई

ग्वालियर ( न.सं. )। महावीर जयंती महोत्सव समिति एवं अखिल जैन समाज ग्वालियर की विशेष बैठक आज रविवार को गस्त का ताजिया स्थित जैन स्वर्ण पार्वनाथ धर्मशाला में आयोजित की गई।

महावीर जयंती के प्रवक्ता सचिन जैन ने बताया कि बैठक में 2019 के समिति के संयोजक विनय कासलीवाल और कोषाध्यक्ष वर्ष 2019 के कार्यक्रम समीक्षक की साथ ही आयुष्य प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

इस बैठक में सकल जैन समाज की सहायमिति से 2020 की महावीर जयंती के संयोजक पदमचंद्र जैन ग्वालियरी को एवं कोषाध्यक्ष निर्मल पाटनी एवं सह कोषाध्यक्ष मनोज सेठी को नियुक्त कर मनाया गया। वहीं मुनिश्री विहरण सागर महाराज की स्वाकृति मिल जाने पर 06 अप्रैल को होने वाली महावीर जयंती पर



धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाएगी। इस बैठक में 06 अप्रैल 2020 को भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक महोत्सव 2020 का पर्व की तैयारियों लेकर और मुनिश्री विहरण महाराज को महावीर जयंती की स्वकृति के

लिए सकल जैन समाज और महावीर जयंती महोत्सव पहुंचकर मुनिश्री को श्रीफल चढाकर महावीर जयंती बनाने की आज्ञा लेगे। इस मौके पर महोत्सव समिति के महेंद्र टोंग्या, रतन अजमेरा, बालचन्द्र जैन, मंयक पाड्या, पुरुषोत्तम जैन, सुनील

गोधा, धरम वरैया, अनुपम जैन, पकज वाकलीवाल, विनय कासलीवाल, संजीव अजमेरा, कमलेश बिलाल आदि सकल जैन समाज व जैन समाज की शाखाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्य के लोगो इस बैठक में शामिल थे।

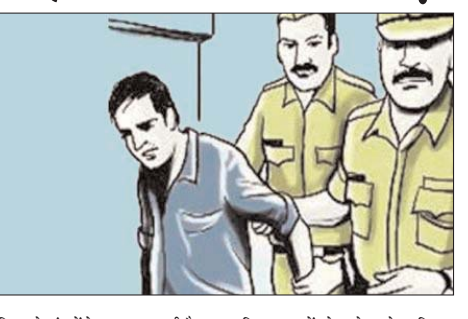
## बजरंग दल व विहिप अंचल में अपनी गतिविधियां बढ़ावेंगे

ग्वालियर। बजरंग दल और विधि हिन्दू परिषद ग्वालियर अंचल को फिर से अपना केन्द्र बनाये रखने पर जोर दे सकते हैं। आज बजरंग दल के प्रांतीय अधिवेशन में बजरंग दल को फिर से और ज्यादा सक्रिय करने को लेकर विभिन्न मुद्दों पर भी चर्चा हुई। अधिवेशन में विहिप के अंतर्राष्ट्रीय महासचिव मिलिंद परांडे विशेष रूप से मौजूद थे। बजरंग दल के ग्वालियर अंचल में हो रहे प्रांतीय अधिवेशन के लिए प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। वहीं पूर्व बजरंग दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मंत्री जयभान सिंह पंवेया का भी प्रांतीय अधिवेशन में पहुंचना चर्चा का केन्द्र रहा। पंवेया ने विहिप के अंतर्राष्ट्रीय महासचिव मिलिंद परांडे से भी सौजन्य मुलाकात की। उन्होंने विभिन्न वैचारिक मुद्दों पर विस्तार से परांडे से बात की और प्रदेश के ताजा हालातों पर भी चर्चा की।

## बदनापुरा में पुलिस का ऑपरेशन तलाश

### पांच हजार का इनामी बदमाश पकड़ा

ग्वालियर ( न.सं. )। शहर की बदनाम बस्ती बदनापुरा और रेशमपुरा में पुलिस के ऑपरेशन तलाश के तहत छापामारी की गई। सवा सौ पुलिस जवानों के साथ इलाके में छापामारी करने निकले और उनके हथियार एक पांच हजार का इनामी बदमाश लग गया। यहां कई बच्चों के पहचान पत्र भी चेक किए। जिससे तस्दीक हो सके कि वह कहीं और से लाकर नहीं रहे गए हैं। एसपी नवीन भसीन ने गुमशुदा नाबालिग छोटे बच्चों की पड़ताल के लिए ऑपरेशन तलाश शुरू किया है। इसी ऑपरेशन तलाश के तहत सीएसपी रवि भदौरिया के निर्देशन में टीआई दामोदर गुप्ता और प्रीती भार्गव सवा सौ जवानों के साथ आज तड़के बदनापुरा छापामारी करने पहुंचे। यहां पुलिस ने पहले गांव को चारों ओर से घेर लिया। इसके बाद एक एक घर की तलाशी शुरू हुई।



पुलिस को गांव में देख अफरा-तफरी फैल गई। पुलिस ने खासतौर पर बच्चों पर फोकस किया। हर बच्चे व लड़की को आईडी वहां मौजूद लोगों से मांगी। इसके बाद बच्चों को आईडी पुलिस ने क्रॉस चेक करने के बाद ही उन्हें छोड़ा। इस दौरान एक युवक पुलिस को देखकर दौड़ लगाने लगा। युवक का पीछा कर के

पुलिस जवानों ने उसे दबोच लिया। पड़ताल में सुराग लगा कि भागने वाला युवक शक्ति कलावत है जो पुरानी छवनी थाने से लूट में बांटे हैं। उसकी गिरफ्तारी पर पांच हजार का इनाम भी घोषित था। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर थाने भिजवा दिया। वहीं पुलिस ने वहां मौजूद लड़कियों से भी बात की।

## छात्राओं को घुमाया किला, बताई विरासत की खासियत

ग्वालियर। मध्य भारत शिक्षा समिति द्वारा संचालित माधव विधि महाविद्यालय की रामेशो इकाई द्वारा आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर

के छठवें दिन पड़वा स्थित गायत्री नगर में महाविद्यालय की छात्राओं ने सुबह प्रभात फेरी निकालकर योग किया। इसके बाद ग्वालियर फोर्ट पर अलग-अलग

अलग शैली की बनी ऐतिहासिक विरासत जानकारी देने के लिए छात्राओं को ग्वालियर फोर्ट का भ्रमण कराया गया। इस दौरान कार्यक्रम अधिकारी डॉ नीति पांडे ने फोर्ट की ऐतिहासिक विरासत को जानकारी छात्राओं को दी। इसके अंतर्गत मानसिंह पैलेस, तेली का मंदिर, कर्ण महल, सहित सूरज कुंड का भ्रमण कराया। इसके बाद सूर्य मंदिर का भी भ्रमण कराया। इस मौके पर कार्यक्रम अधिकारी डॉ नीति पांडे ने छात्राओं से कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर में समय की पाबंदी, योजनाबद्ध तरीके से काम करना जैसी बातें सीखीं। घर में कितने बच्चे भी उठे, कुछ भी करो कोई पाबंदी नहीं है, पाबंदी तो यहां भी नहीं है, लेकिन जीवन को किस तरह से जीना है कि वह बेहतर रूप ले सके, यह यहां सीखा। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी डॉ अमित बंसल, रीना रानी जाट आदि उपस्थित थे।

## जल संकट को दूर करने के लिये वर्षाजल संचय ही एक मात्र विकल्प है - शेजवलकर

### सांसद शेजवलकर ने किया वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम का लोकार्पण

ग्वालियर ( न.सं. )। जल संकट को लेकर पूरा विश्व समुदाय चिन्तित है। परन्तु इस समस्या के हल के लिये सभी स्तरों पर पूरी जिम्मेदारी व ईमानदारी के साथ एकीकृत प्रयास की आवश्यकता है। जलसंकट से निपटना जरूरी है तभी हमारा आज और कल (वर्तमान एवं भविष्य) सुरक्षित रहेगा। इसके लिये कई वैज्ञानिक तरीके हैं जिनमें सबसे कारगर तरीका है-रेन वाटर हार्वेस्टिंग। वर्षाजल के संचय से जलस्रोतों को सजीव बनाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में हमने जो प्रकृति से लिया है वह प्रकृति को ही वापस लौटाना भी है। निसन्देह, वर्षाजल एक अनमोल प्राकृतिक उपहार है जो प्रतिवर्ष लगभग पूरी पृथ्वी को बिना किसी भेदभाव के मिलता रहता है। परन्तु समुचित प्रबन्धन के अभाव में वर्षाजल व्यर्थ में बह जाता है। वर्तमान जल संकट को दूर करने के लिये वर्षाजल संचय ही एक मात्र विकल्प है। उक्त बात सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने तिकोनिया पार्क, सुरेश नगर, कर्नल साहब के घर के सामने ए-ब्लॉक जिला पंचायत ऑफिस के सामने डाटीपुर एवं कन्या विद्यालय



डाटीपुर में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के कार्यों लोकार्पण करते हुए कही। जिनकी लागत राशि लगभग दस लाख रुपये है।

इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. सतीश सिंह सिकरवार एवं पार्षद दिनेश दीक्षित उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विजय सक्सेना ने की इस अवसर पर श्री लालमणी शर्मा, श्री वी.के. शर्मा, श्री राजीव दुबे, श्री प्रशांत चतुर्वेदी, श्री

वीरेंद्र सिंह राणा, श्री रूप सिंह घुरैया, श्री बबलू राणा, श्री शशिकांत शिवहरे, श्री मधुसुदन भदौरिया, श्री नवीन शर्मा, श्री पी.आर शर्मा, श्री साहिब अली खान, श्री कपिल शर्मा, श्री नरेन्द्र सिकरवार, श्री अरविन्द तोमर, मेडम कर्नल, श्रीमती उषा मिश्रा आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे। श्री शेजवलकर ने कहा कि यदि वर्षाजल के संग्रहण की समुचित व्यवस्था हो तो न केवल

जल संकट से जूझते शहर अपनी तत्कालीन जरूरतों के लिये पानी जुटा पाएँगे बल्कि इससे भूजल भी रिचार्ज हो सकेगा। अतः शहरों के जल प्रबन्धन में वर्षाजल की हर बूँद को सहेजकर रखना जरूरी है। श्री शेजवलकर ने कहा कि हमारे देश में प्राचीन काल से ही जल संचय की परम्परा थी तथा वर्षाजल का संग्रहण करने के लिये लोग प्रयास करते थे। इसीलिये कुएँ, बावड़ी, तालाब, नदियाँ आदि पानी से भर रहे थे। इससे भूजल स्तर भी ऊपर हो जाता था तथा सभी जलस्रोत रिचार्ज हो जाते थे। परन्तु मानवीय उपेक्षा, लापरवाही, औद्योगिकरण तथा नगरीकरण के कारण ये जलस्रोत मृत प्रायः हो गए। कई जलस्रोत तो कच्चे कट्टे के रूप में बदल गए। कई जलस्रोतों पर अवैध कब्जे हो गए। मिट्टी और गंध भर जाने से उनकी जल ग्रहण क्षमता समाप्त हो गई और समय के साथ वे टूट-टूट गए। अभी भी समय है कि इनमें से कई परम्परागत जलस्रोतों को पुनर्जीवित करने का प्रयास करके उन्हें बचाया जा सकता है।